जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ,
मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419,
Email- jaingazette2@gmail.com
www.jaingazette.com

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

गुरू का शिष्य कैसा हो, वर्धमान सागर जैसा हो

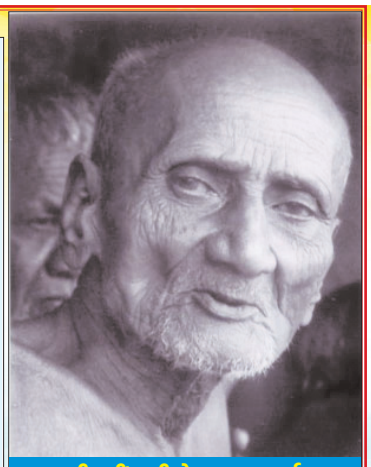

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 30 अंक 50 कुल पृष्ठ 12 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 21 अक्टूबर 2024, वीर नि. संवत् 2550

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

प्रथमाचार्य शांतिसागरजी के गुणानुवाद में समर्पित हुआ देश

आचार्यश्री वर्धमान सागरजी के सान्निध्य में पारसोला से प्रारंभ हुआ आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव, देश भर से उमड़े श्रद्धालुओं के साथ पहुंचे राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया

(पारसोला से राजेन्द्र जैन महावीर सनावद की रिपोर्ट)

पारसोला। सोलह पहाडियों से घिरा छोटा सा नगर पारसोला इन दिनों प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागरजी महाराज के गुणगान में समर्पित दिखाई दे रहा है। वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में आगामी वर्ष भर तक आयोजित होने वाले आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव का शुभारंभ 13 से 15 अक्टूबर 2024 तक राजस्थान शेष पृष्ठ 03 पर.....

WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
5 Nov यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
PARIS, SWITZERLAND, ITALY

SRILANKA
29 Nov श्रीलंका जैन मंदिर के दर्शन
COLOMBO, KANDY, BENTOTA, NUWARAELIYA

VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
100% Pure Vegetarian Jain Food
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

इंडियन इर्म्पोटेड ग्रेनाइट मार्बल्स
(सभी प्रकार के मार्बल्स को खरीदने के लिए सम्पर्क करें)

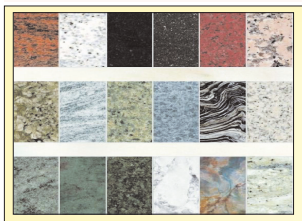

❑ तिलक मार्बल्स (प्रा.) लि. ❑ तिलक मार्बल्स, तिलक ग्रैनाइट्स ❑ श्री रघुपति कोटेक्स पाटन
❑ तिलक मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ तिलक स्टोन आर्टस इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर ❑ तिलक हैण्डीक्राफ्ट्स
❑ शाश्वत मार्बल्स एण्ड हैण्डीक्राफ्ट्स ❑ राजीव मार्बल्स एण्ड इंजीनियर्स, समस्त तिलक ग्रुप

सम्पर्क अधिकारी: शेखर चन्द पाटनी, 9667168267, 8003892803 ईमेल - rkpatni777@gmail.com

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

875 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

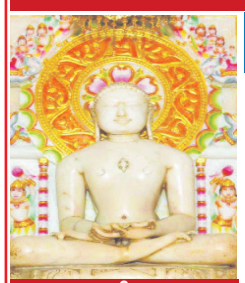

शांतिधारा का प्रसारण

LIVE

शांतिधारा : 7:30 AM
संध्या आरती - 7:00 PM

@jainmandirhasteda

नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9784857991

हस्तेड़ा जैन मंदिर
दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.

अन्य जानकारी हेतु स्थानीय संपर्क सूत्र
मनीष गंगवाल-सह अध्यक्ष
मोबाइल नंबर 95880 20330

इस अतिशय क्षेत्र में किसी भी तरह की बोली, चंदा, डाक या राशि का आग्रह वर्जित है।

JK MASALE SINCE 1957

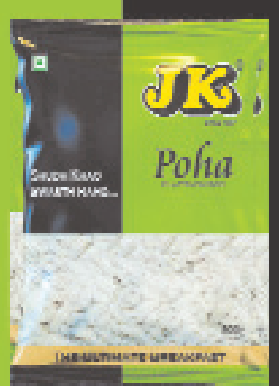

Buy online on jkcart.com

— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

रतन टाटा के पास जितना पैसा था उससे ज्यादा उदारता थी

रतन टाटा की सादगी, उनका देश और राष्ट्र के लिए योगदान, प्रशंसनीय और अनुकरणीय हैः आचार्यश्री प्रसन्न सागर जी

नरेंद्र अजमेरा पियुष कासलीवाल

औरंगाबाद। भारत गौरव साधना महोदधि सिंहनिष्क्रीड़ित व्रतकर्ता अन्तर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज एवं सौम्यमूर्ति उपाध्याय 108 श्री पीयूष सागर जी महाराज ससंघ का 2024 का चैमासा कुलचारम में चल रहा है। प्रवचन में भक्तों को कहा कि इन्सान से इन्सान को दूर करने वाली दो ही चीज हैं पैसा और जुबान, लेकिन रतन टाटा इसके अपवाद थे। जितना पैसा था उससे ज्यादा उदारता थी। वाणी व्यवहार के कुशल शिल्पी थे। रतन टाटा से किसी ने पूछा - आपको जीवन में सबसे ज्यादा खुशी कब और किस चीज में मिली-? उन्होंने कहा - अपार धन दौलत कमाने से वो सुख नहीं

मिला, महलनुमा घर होने पर भी वो सुख नहीं मिला, उद्योग जगत में खूब नाम कमाने से भी वह सुख नहीं मिला, जो सुख मुझे 200 बच्चों को व्हीलचेयर देने से मिला। मेरे मित्र ने कहा - सर 200 व्हीलचेयर खरीदना है - मैंने तुरंत 200 व्हीलचेयर खरीद ली। दोस्त ने कहा - सर आप भी साथ चलें। मैं उनके साथ चल दिया। वहां जाकर देखा - सभी बच्चे अपंग हैं। सभी बच्चों को हमने अपने हाथ से एक एक व्हीलचेयर दी। बच्चों के चेहरे पर जो खुशी, आनंद देखा वह अद्भुत और अकल्पनीय था। जब बच्चे व्हीलचेयर पर बैठकर घूम रहे थे, मस्ती कर रहे थे, यह सब देखकर ऐसा लगा कि बच्चे जैसे किसी पिकनिक स्पॉट पर घूम रहे हों। हमें अपने जीवन की सबसे ज्यादा खुशी तब मिली जब मैं वहां से लौटने लगा तो कुछ बच्चों ने मेरे पैर पकड़ लिये, मैंने कहा- बच्चो और कुछ चाहिए क्या आप लोगों को-? बच्चों ने जो जवाब दिया, वो सुनकर मेरी रूह कांप गई। बच्चों के जबाब ने मेरा दृष्टिकोण बदल दिया। बच्चों ने कहा - सर मैं आपका चेहरा याद रखना चाहता हूं ताकि जब मैं आपसे स्वर्ग में मिलूं तो आपको पहचान सकूं और धन्यवाद दे सकूं। कहने का मतलब यह है कि - अपने अन्तर्मन में झांकना चाहिए और यह मनन अवश्य करना चाहिए - आपको किस चीज के लिए याद किया जायेगा-? क्या कोई आपका चेहरा फिर से देखना और याद रखना चाहेगा-? नियति का अकाट्य नियम है - जो आया है उसे जाना पड़ेगा। जो जन्मा है उसे मरना भी पड़ेगा। रतन टाटा ने - सुई से लेकर एयर इण्डिया के हवाई जहाज तक, नमक से लेकर आटा तक, ऑटो से लेकर ट्रक तक, चाय से लेकर - स्टार बक्स कॉफी तक, नैनो से लेकर - RANGE ROVER की कार तक, पंखों से लेकर - AC तक.. सब कुछ रतन टाटा की देन है, जो हर घर परिवार समाज और देश का प्रत्येक भारतीय उपयोग कर रहा है। रतन टाटा की सादगी, उनका देश और राष्ट्र के लिए योगदान, प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

गुवाहाटी से आये तीर्थयात्रियों का स्वागत झुमरीतिलैया जैन समाज ने किया

झुमरीतिलैया। रेहाबाड़ी यात्रा संघ, गुवाहाटी से आये जैन तीर्थयात्रियों का स्वागत श्री दिगंबर जैन समाज झुमरीतिलैया के पूर्व मंत्री ललित कुमार जी सेठी के द्वारा किया गया। ज्ञात हो कि गुवाहाटी से लगभग 51 तीर्थयात्री गुवाहाटी से चलकर कानकी, चम्पापुर, राजगीर, पावापुरी, कुंडलपुर होते हुए कोडरमा पहुंचे जहां पर समाज के लोगों ने संघपति प्रदीप गोधा तथा ज्ञानचंद-निशा काला सहित सभी तीर्थयात्रियों को माला दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया और समाज के सुबोध गंगवाल ने स्वागत गीत गाकर सभी यात्रियों का अभिवादन किया, इस अवसर पर समाज के पूर्व मंत्री ललित सेठी, सुरेश झांझरी, सुशील छाबड़ा, उप-मंत्री नरेंद्र झांझरी, सह-मंत्री राज छाबड़ा कोषाध्यक्ष सुरेंद्र काला ने आगंतुकों के स्वागत में कहा कि हमारा सौभाग्य कि हम सभी को पंच तीर्थ यात्रा करते हुए तीर्थराज सम्मेदशिखर जी जाने वाले यात्रियों का स्वागत करने का सौभाग्य मिल जाता है साथ ही ललित सेठी,

संदीप सेठी, आशीष सेठी और महिला समाज की अध्यक्षा नीलम सेठी ने संयुक्त रूप से कहा कि पंच तीर्थ की यात्रा करना बहुत ही पुण्यदायी होता है और उस यात्रा में भी सम्मेदशिखर की यात्रा करने का सौभाग्य महाभाग्यशाली जीव को ही मिलता है क्योंकि सम्मेदशिखर जी की यात्रा बिना योग एवं संजोग के नहीं हो सकती है। सभी यात्रियों को बधाई देते हुए कहा कि आपकी सम्मेदशिखर जी की यात्रा निर्विघ्न हो, सभी दर्शन का लाभ मिले। यात्रा में विशेष रूप से संघपति प्रदीप गोधा, सुभाष बड़जात्या, मनोज रांवका, रामचंद सेठी, धर्मचंद पांड्या, ज्ञानचंद काला, निशा काला, अहिंसा जैन महिला समाज की, मंजू गोधा, सरला बड़जात्या, सुनीता रारा, डिमापुर से आई प्रेमलता जैन इस यात्रा में शामिल थी। कोडरमा मीडिया प्रभारी राज कुमार जैन अजमेरा, नवीन जैन ने भी सभी यात्री को शुभकामनाएं दीं।

सम्मेद शिखरजी में 15 जैनेश्वरी दीक्षाएं संपन्न

श्री सम्मेदशिखर जी मधुबन, 12 अक्टूबर। स्थानीय तेरापंथ कोठी जो कोलकाता की श्री बंगाल बिहार उड़ीसा दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा संचालित है, द्वारा आयोजित एक समारोह में गौशाला परिसर में दिगंबर जैन आचार्य विहर्ष सागर जी महाराज ने 15 साधकों को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान करते हुए उन्हें मोक्षमार्ग पर अग्रसर किया। इस प्रक्रिया में पांच साधकों को मुनि दीक्षा, पांच साध्वियों को आर्यिका दीक्षा, दो क्षुल्लक, दो क्षुल्लिका एवं एक साधक को ऐलक दीक्षा प्रदान की गई। समारोह में देश भर से अलग-अलग स्थान से आए हुए हजारों लोग शामिल हुए। तीन दिवसीय कार्यक्रम में 10 अक्टूबर को तेरापंथ कोठी में ध्वजारोहण के पश्चात गणधरवलय विधान हुआ एवं रात्रि में दीक्षार्थियों की हल्दी मेहंदी का कार्यक्रम हुआ। 11 अक्टूबर को दोपहर में सभी दीक्षार्थियों की भव्य बिंदोरी यात्रा निकल गई जिस पर अलग-अलग बग्घीयों पर एवं आकर्षक गाड़ियों पर दीक्षार्थी बैठे और उनका जगह-जगह स्वागत हुआ, उसी दिन रात्रि में रूपेश जैन के भजनों का कार्यक्रम हुआ, दीक्षा प्रदान कर आचार्य श्री ने इस प्रकार नामकरण किया। मुनि श्री शिखर हर्ष सागर जी महाराज, मुनि श्री सिद्ध हर्ष सागर जी महाराज, मुनि श्री सर्व हर्ष सागर जी महाराज, मुनि श्री स्वर्ण हर्ष सागर जी महाराज, मुनि श्री सुहर्ष सागर जी महाराज, आर्यिका सिद्धांतमति माताजी, आर्यिका अमृत हर्ष श्री माताजी, आर्यिका मौली हर्ष श्री माताजी, आर्यिका निधि हर्ष श्री माताजी, आर्यिका विजय हर्ष श्री माताजी, क्षुल्लिका बिंदु हर्ष श्री माताजी, क्षुल्लिका शोध हर्ष श्री माताजी, ऐलक नमन हर्ष सागर जी महाराज, क्षुल्लक बोधी हर्ष सागर जी महाराज, क्षुल्लक कृपा हर्ष सागर जी महाराज।

आर्यिका पूर्णमति माताजी को 2025 के चातुर्मास के लिए किया पुनः श्रीफल भेंट

गत गुरुवार 03 अक्टूबर 2024 को श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी के 125 व्यक्तियों के प्रतिनिधि मंडल ने ग्वालियर पहुंचकर पूज्या 105 पूर्णमति माताजी ससंघ को 2025 का चातुर्मास श्री दिगम्बर जैन पंचायत, गुवाहाटी में करने हेतु पुनः निवेदन के साथ श्रीफल अर्पित किया है। चातुर्मास कहां करना है इसके लिए संघ को गुरु आज्ञा की जरूरत होती है और इसकी स्वीकृति के लिए गुरूवर समयसागर जी महाराज को भी प्रतिनिधि मंडल द्वारा पुनः निवेदन किया गया। मालूम हो पूज्या माताजी ससंघ का चातुर्मास गुवाहाटी कराने के लिए बहुत समय से गुवाहाटी पंचायत प्रयासरत है और अभी हाल भी में गत रविवार

को पंचायत के 125 व्यक्तियों का एक प्रतिनिधिमंडल गुवाहाटी चातुर्मास करने के लिए माताजी को निवेदन करने ग्वालियर पहुंचा था। हालांकि अभी तक पूज्या माताजी ने अपने पत्ते नहीं खोले है, मगर प्रयासरत गुवाहाटी समाज को सफलता की पूरी उम्मीद है और यह सफलता पाने के लिए गुवाहाटी समाज कोई कोर कसर छोड़ना नहीं चाहती।

चिकलठाणा में आचार्य गुप्तिनंदीजी का भव्य स्वागत

एम. सी. जैन, चिकलठाणा

औरंगाबाद में संभाजी नगर के पास रामनगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में कलश स्थापना निमित्य, राष्ट्रसंत, भारत गौरव, धर्म तीर्थ प्रणेता, आचार्य मुनिश्री गुप्तीनंदी जी का, चिकलठाना में पत्रकार एम सी जैन के निवास स्थान के सामने ससंघ आगमन हुआ तो मुनिश्री जी का पाद प्रक्षालन हुआ। सौ. हेमलताजी पाटणी जी, प्रा. डा. राजेश एम पाटणी, दीनेश सेठ ने पाद प्रक्षालन किया। सौ. डा. स्नेहल, सौ. मन्जुशा, डा. प्रितेश, इंजी. प्रतीक ने ''जयकारा गुरुदेव का'' घोषणा की। मंगलमय वातावरण में मुनिश्री गुप्तिनंदीजी ने शुभाशीष प्रदान किये।

इंदौर फिलेटेलिक सोसायटी के सदस्यों ने लिया संज्ञान भेजे पोस्ट कार्ड

पोस्ट कार्ड हाथ में लिए सदस्यगण

इंदौर। मुनिश्री विनम्र सागर जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ''स्वच्छ इंटरनेट सुरक्षित देश'' अभियान के अंतर्गत वर्धमानपुर शोध संस्थान द्वारा चल चलाए जा रहे हैं, पोस्टकार्ड अभियान से जुड़कर इंदौर फिलेटली सदस्यों ने माननीय प्रधानमंत्री एवं संचार मंत्री को पत्र भेजकर निवेदन किया कि इंटरनेट और ओटीटी प्लेटफार्म पर परोसी जा रही अश्लीलता को शीघ्र बंद किया जाना चाहिए। इस अवसर सोसायटी के अध्यक्ष रविन्द्र नारायण पहलवान सहित कई सदस्य मौजूद रहे। अभियान के बारे में जानकारी देते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान के ओम पाटोदी ने बताया कि इस अभियान कि शुरुआत अहिंसा दिवस गांधी जयंती पर विनम्र वाणी परिवार एवं जैन सोशल ग्रुप ओजस के सदस्यों ने हजारों लोगों के साथ हाथों पर काली पट्टियां बांध कर की थीं। इसी मुहिम को आगे बढ़ाते हुए वर्धमानपुर शोध संस्थान द्वारा मुनि श्री के आशीर्वाद से पोस्ट कार्ड लिखो अभियान प्रारंभ किया गया है। इस दौरान वहां मौजूद समस्त सदस्यों ने इसे अपने अपने तरीके से आगे जारी रखने की बात कही।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला श्रीमती सरिता काला संदीप-स्वाति पाटनी श्रेयांस-स्नेहा काला
RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com
SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

प्रथमाचार्य शांतिसागरजी के गुणानुवाद में समर्पित हुआ देश

शेष पृष्ठ 1 का.....

के पारसोला जिला प्रतापगढ़ में हुआ। अनेक आयोजनों के साथ भव्यातिभव्य शुभारंभ समारोह में संपूर्ण भारतवर्ष के श्रावक श्रेष्ठी, राजनेता, गणमान्यजन, विद्वत समुदाय ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर आचार्य शांतिसागरजी महाराज के गुणानुवाद में अपने आपको समाहित किया।

विशाल शोभायात्रा में गूंजा ''जो ध्यावे सो पावे'': पारसोला नगर में विशाल शोभायात्रा जुलुस आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में निकला जो अभूतपूर्व था। बच्चे, युवा, बुजुर्ग, महिला, पुरुष सभी उत्साह से भरे थे। सभी विभिन्न संगठनों की वेशभूषा में आचार्यश्री शांतिसागरजी की जय-जयकार में अपने आपको समाहित कर रहे थे। शोभायात्रा पारसोला नगर भ्रमण करती हुई महोत्सव स्थल पहुंची।

ध्वज की दिशा दक्षिण की ओर गई : महोत्सव स्थल पर ध्वजारोहण दानवीर भामाशाह अशोक-सुशीला पाटनी आर. के. मार्बल ने किया। ध्वज की डोर खुलते ही वह दक्षिण की ओर लहराने लगा। उल्लेखनीय है कि आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का जन्म स्थान दक्षिण भारत का भोज ग्राम है। आचार्य श्री वर्धमानसागरजी ने कहा कि ध्वज का शुभ संदेश है कि उत्तर से दक्षिण की ओर ध्वज लहराया है। मण्डप उद्घाटन राजेन्द्र कटारिया परिवार ने किया। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के सहकारिता मंत्री गौतम दक, महोत्सव समिति अध्यक्ष अनिल सेठी, बेलगांव, विधायक अभय पाटिल, महासभा अध्यक्ष गजराज गंगवाल, संजय पापड़ीवाल, पवन गोधा, विवेक काला, सुरेश सबलावत, हसमुख गांधी, संजय दीवान, ऋषभ पचोरी, टी. के. वेद सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। ध्वजारोहण की समस्त क्रियाएं वाणीभूषण प्रतिष्ठाचार्य पं. हसमुख जैन नंदनवन धरिवाद, पं. भागचंद जैन ने संपन्न कराई। संचालन महोत्सव समिति के महामंत्री राकेश सेठी कोलकाता ने किया।

महाश्रमण व महानायक थे आचार्य शांतिसागर - आचार्य वर्धमानसागर : आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की अक्षुण्ण पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाधीश आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि वे श्रमण सूर्य थे, जिन्हें महाश्रमण, महानायक भी कह सकते है जिन्होंने सैकड़ो वर्षो से लुप्त दिगम्बर श्रमण परम्परा को जीवंत करते हुए हमारी पहचान व मोक्ष मार्ग को प्रशस्त किया। सहकारिता मंत्री गौतम दक ने कहा कि जैन नाम आते ही सम्मान का भाव आता है। यह हमारी पुरखों की देन है कि उन्होंने समाज के सम्मुख ऐसा आचरण प्रस्तुत किया था।

वर्षभर जिनवाणी संवर्धन व स्वावलंबन पर होगा कार्य - अनिल सेठी : आचार्यपद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव कमेटी के अध्यक्ष अनिल सेठी बैंगलुरु ने कहा कि आचार्यपद पदारोहण शताब्दी वर्ष के अंतर्गत समिति जिनवाणी के संवर्धन संरक्षण का कार्य करेगी। प्राचीन ग्रंथों के मेन स्क्रिप्ट को केमिकल ट्रीटमेंट कर संरक्षित करना और उनका डिजीटलाईजेशन करना, अप्रकाशित ग्रंथों को प्रकाशित करना और साधर्मीजनों में आर्थिक विपन्नजनों को रोजगार प्रदान करना उन्हें स्वावलंबी बनाना इस वर्ष का प्रमुख उद्देश्य रहेगा। कुम्भोज बाहुबली में दो लाख ताड़पत्रों को संरक्षित किया गया है। समिति जिनवाणी संरक्षण का कार्य कर ग्रंथ स्थानीय कमेटी को ही सौंप देती है। साथ ही उन्हें उन्हीं जगह जाकर संरक्षित करती है। उन्होंने बताया कि जैन समाज के पास एक करोड़ प्रतिलिपियां जिन्हें संरक्षित करना है।

समिति के गौरव परम शिरोमणि संरक्षक अशोक पाटनी ने कहा कि आचार्य शांतिसागरजी का उपकार भूल नहीं पाएंगे, उन्होंने लुप्त परम्परा को पुर्नर्जीवित कर हम सबका महान उपकार किया है। मंगलाचरण श्रीमति सुशीला अशोक पाटनी, आर. के. मार्बल किशनगढ़ ने किया। अनिल सेठी, राकेश शाह, दिनेश खोड़निया ने पाद प्रक्षालन व जिनवाणी भेंट की।

श्रमणत्व के क्षितिज सहित अनेक पुस्तकों का विमोचन : समारोह में भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित श्रमणत्व के क्षितिज पुस्तक का लोकार्पण किया गया। लेखक ब्र. सुनील सांधेलिया व विश्व परिवार के संपादक प्रदीपक जैन उपस्थित थे। मोक्षमार्ग प्रकाशक का विमोचन मनीष भरत गंगवाल कोलकाता द्वारा कराया गया। पारसोला के बालिका मंडल ने मंगल नृत्य व सुनो एक संत कहानी की नृत्य नाटिका का मंचन किया गया। आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की पिच्छी कमण्डल सिंहासन का विमोचन संजय पुनीत पापड़ीवाल आदि ने किया।

108 तरह की द्रव्यों से हुई महाअर्चना : प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज पर मुनिश्री हितेन्द्रसागरजी, मुनिश्री चंद्रगुप्तजी द्वारा लिखित श्री शांतिसागरजी मुनिराज मण्डलविधान की पूजा महाअर्चना के रुप में हुई। पूजन में 108 कलशों में जल, चंदन, 108 प्रकार के विशेष पुष्प, 108 प्रकार का नैवेद्य, 108 दीपक, 108 धूप, 108 फल, 108 अर्घ विशेष भक्ति भाव से चढ़ाये गए। संगीतकार राम कुमार की स्वर लहरियों के बीच मंडल विधान की पूजा सभी ने आनंद पूर्वक की। रात्रि को सभामंडप में सांस्कृतिक कार्यक्रम के पूर्व विनयांजलि के क्रम में ओजस्वी वक्ता व लेखक राजेन्द्र जैन महावीर सनावद, वयोवृद्ध विद्वान पं. सुरेश मारोरा इन्दौर व दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुल सचिव प्रो. नलिन के. शास्त्रीजी दिल्ली, बालकवि आगम अतुल शाह ने भी अपनी विनयांजलि समर्पित की, संचालन महामंत्री राकेश सेठी ने किया।

प्रथमाचार्य के जीवन की प्रदर्शनी व फिल्म दिखाई गई : समारोह स्थल पर भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महराज के जीवन वृत्त चारित्र चक्रवर्ती पर आधारित विशाल प्रदर्शनी में उनका संपूर्ण जीवन वृत्त प्रदर्शित किया गया, फिल्म के माध्यम से उनकी आदर्श चर्या को बताया गया। द्वितीय दिवस सातगौडा से शांतिसागर फिल्म का ट्रेलर प्रदर्शित किया गया। निर्देशक आशा नरेश मालवीय सलूम्बर व विनय कुमार अनंत कुमार बड़जात्या किशनगढ़ उपस्थित थे। यह फिल्म दो घण्टे की है जिसे संपूर्ण भारतवर्ष में प्रदर्शित किया जाएगा।

आचार्य शांतिसागरजी की चरित्र हमारे अपनाने योग्य - राज्यपाल कटारिया : पंजाब के राज्यपाल व चंडीगढ़ के प्रशासक गुलाबचंद कटारिया विशेष रुप से पारसोला पहुंचे और उन्होंने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के जीवन चरित्र को अपनाने की अपील करते हुए उन्हें आदर्श संत बताया व आचार्य वर्धमानगसारजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। राज्यपाल श्री कटारिया ने धर्मशिक्षा व वज्रसेन पुस्तक का विमोचन कर प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। श्रुत स्तवन के तहत श्रुतदेवी को रजत पालकी में विराजित कर भव्य प्रभावना जुलुस सन्मति नगर से शांतिसागर धाम पहुंचा। इस अवसर पर सौधर्म इन्द्र परिवार ने विशेष पूजा की। मुनिश्री पुण्य सागरजी, मुनिश्री अपूर्वसागरजी, मुनि श्री हितेन्द्रसागरजी, मुनिश्री प्रभावसागरजी महाराज सहित संघस्थ मुनिराज, आर्यिका माताजी ने प्रथमाचार्य के अनेक संस्मरण सुनाकर उनके उपकारों को बताया।

शेष पृष्ठ 7 पर....

सन्मतिसुनीलम

रीति रिवाज पर नहीं, आत्महित के काज में लगिए
प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चारित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य
श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत शत नमन, वंदन।
-: नमनकर्ता :-
श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति किशनगढ़ सम्भाग
राजकुमार बड़जात्या (मरवा वाले)
मानकचंद गंगवाल (कडेल वाले)
महावीर महिला मण्डल किशनगढ़
श्रीमती सरिता पाटनी, किशनगढ़
हेमन्द्र कुमार एडवोकेट बांसवाड़ा
महावीर प्रसाद अजमेरा जैन गजट वरिष्ठ संवाददाता जोधपुर
विमल कुमार बड़जात्या, किशनगढ़ (मरवा वाले)
कमल कुमार वैद (ज्वैलर्स)
श्रीमती जया पाटनी पुराना हाउसिंग बोर्ड किशनगढ़
कुशल ठोल्या - जयपुर
श्रीमती ममता सोगानी - जयपुर
आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज का चातुर्मास मदनगंज किशनगढ़ में हो रहा है।
संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

तेज दौड़ दौड़ना है तो आगे-आगे चलो, लम्बी दौड़ दौड़ना हो तो सबको साथ लेकर चलो

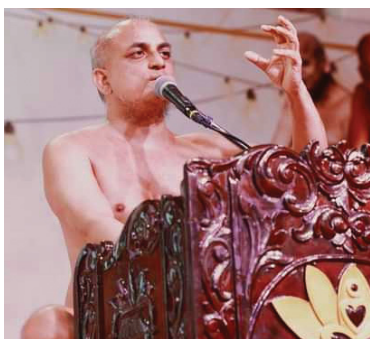

- मुनि प्रणम्यसागरजी

समाज के नवांकुर मेडिकल, इन्जीनियरिंग, सी ए, सी एस, लोयर, UPSC व खेलकूद में राष्ट्रीय अवार्डी आदि कर रहे छात्र-छात्राओं को बुलाकर चारित्रिक, धार्मिक, अर्हंध्यान, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, कैरियर मैनेजमैन्ट के विशेष सत्र

जयपुर, दि.13.10.24। जीवन में एक मैन्टोर यानि एक गुरु अवश्य बनायें, गुरु से कनैक्ट होने पर ही प्रभु से कनेक्ट हो सकते हैं, विपत्तियों से घबरायें नहीं, विपत्तियां पतझड के समान हैं, पुराने पत्ते जब गिरते तभी नये पत्ते आते है, कभी अपने आपको अन्दर से अधूरापन न लगने दें, ऐसा समझें कि जो किया है अच्छा और पूरा किया है, जीवन में लक्ष्य बनाना जरूरी है, परन्तु लक्ष्य मात्र सम्भावना है, समय के साथ लक्ष्य बदलने भी पड जाते हैं, अतः अपने सामने दूसरे विकल्प भी रखें, होस्टल लाइफ बुरी नहीं, बुरी है तो गन्दी आदतें, बस उनसे बचें, सदैव शाकाहार अपनायें और नशों से दूर रहें, तेज दौड़ दौड़ना है तो आगे आगे चलो, लम्बी दौड दौड़ना हो तो सबको साथ लेकर चलो-ऐसे ढेर सारे मोटिवेशन पूज्य मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज ने जयपुर के टैक्सला बिजनिस स्कूल के आडीटोरियम में श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन समिति, मीरा रोड, मानसरोवर के त्वावधान में आयोजित अर्हं अभ्युदय दो दिवसीय कार्यक्रम में दिये जिसमें देशभर से चुने हुये सैकडों जैन समाज के नवांकुर मेडिकल, इन्जीनियरिंग, सी ए, सी एस, लोयर, UPSC व खेलकूद में राष्ट्रीय अवार्डी आदि कर रहे छात्र-छात्राओं को बुलाकर चारित्रिक, धार्मिक, अर्हंध्यान, पर्सनैलिटी डेवलपमेंट, कैरियर मैनेजमैन्ट के विशेष सत्र मुनिश्री के द्वारा एवं बाहर से बुलाये एक्सपर्ट टीम के द्वारा कराये गये।

कार्यक्रम संयोजक अर्हं टीम के श्री नयन जैन ने बताया कि यह मुनिश्री के सानिध्य में आयोजित अब तक का तीसरा आयोजन है, जिसका उद्देश्य जैन समाज की प्रतिभाओं का सर्वांगीण विकास करना और उनका सम्मान करना है। कार्यक्रम के सहयोगी व मंच संचालक आगरा से विशेष रूप से पधारे श्री मनोज जैन बाकलीवाल ने अर्हं अभ्युदय के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जिस प्रकार उगता हुआ सूर्य नयी रोशनी के साथ नयी ऊर्जा लाकर अभ्युदय करता है वैसे ही समाज के हीरों को तरास अभ्युदय लाने का प्रयास इस कार्यक्रम के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

दो दिवसीय कार्यशाला में जहां नित्य दो सत्र स्वयं मुनिराज श्री प्रणम्यसागर जी ने लिये वहीं योग का सत्र श्री चिन्मय जी दिल्ली, विज्ञान का सत्र ।।T गांधीनगर के प्रो. इन्जी. क्रिएटिव लर्निंग हैड श्री मनीष जैन, करियर गाइडेंस सत्र प्रमुख काउन्सलर श्री रीतेश जैन गाजियाबाद, मेडिसन एवं हैल्थ पर सागर के डा. अमित जैन (राजा भैया) व बिजनेस एवं वैल्थ मैनेजमैन्ट पर कोटक महिन्द्रा के पूर्व सी आइ ओ व वर्तमान में 3 पी इन्वेस्टमेंट के सी आइ ओ श्री प्रशान्त जैन ने सत्र लिया। अन्तिम सत्र पैनल डिस्कशन का तो बहुत ही रोचक रहा, जिसमें अमेरिकन एक्सप्रेस बैंक की डायरेक्टर (फाइनैंस) श्रीमती मणी जैन गुडगांव व गिनिस वर्ड बुक ऑफ रिकार्ड मे दर्ज दुनिया का सबसे युवा एन्ट्रप्योनोर (17 वर्ष की आयू मे सरकार से एक्सपोर्ट लासैन्स हासिल कर) इ वी बाइक बनाने वाले श्री राज मेहता ऊपर लिखे एक्सपर्ट के साथ व पूज्य मुनीश्री से जुड़े और प्रतिभाओं की जिज्ञासाओं का समाधान करा। अन्त मे सभी प्रतिभागियों का सम्मान समारोह आयोजित हुआ, कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अर्हं टीम दिल्ली, आगरा, जयपुर के वौलेन्टियर्स ने कड़ी मेहनत की, दो दिवसीय सभी सत्रो का शानदार संचालन जैन समाज के जाने माने राष्ट्रीय एंकर श्री मनोज जैन बांकलीवाल आगरा ने कीया।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, राजस्थान प्रांत, जयपुर द्वारा

चारित्र चक्रवर्ती शांति सागर जी मुनिराज का आचार्य प्रतिष्ठापन शताब्दी दिवस वृहत स्तर पर समारोह पूर्वक मनाया गया

भागचंद जैन

जयपुर। आचार्य शांतिसागर जी मुनिराज को उनकी कठोर तप, साधना, आगम सिद्धांत के पालक, अद्भुत संघ क्षमता, निर्लिप्त भाव आदि गुणों से भरपूर एक सदी पूर्व आश्विन शुक्ल एकादशी वि. सं. 1981को श्रमण संघ द्वारा आचार्य पद पर आरूढ़ किया था, जिसे एक शतक वर्ष पूर्ण होने पर राष्ट्रीय स्तर पर शताब्दी समारोह के रूप में वृहत स्तर पर मनाया गया। भट्टारक जी की नसियां में आयोजित इस कार्यक्रम का शुभारंभ शिखर चंद कासलीवाल द्वारा चित्र अनावरण एवं प्रदीप चूड़ीवाल द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। मंगलाचरण की प्रस्तुति राजेंद्र अनोपड़ा द्वारा की गई। पं. रमेश गंगवाल के निर्देशन में सौधर्म इंद्र सुनील जैन अग्रवाल परिवार द्वारा आचार्य श्री का साजबाज एवं बड़ी ही श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक पूजन किया गया, जिसमें सभी उपस्थित बंधुओं ने सहभागिता की। आचार्य श्री की शांति ध्वजा का विमोचन सभी संस्थाओं से आए हुए अध्यक्ष, मंत्रियों द्वारा किया गया एवं शांति ध्वजा को लहराया गया। ध्वजारोहण श्रीपाल, सुरेश सबलावत परिवार द्वारा किया गया। आचार्य श्री के चित्र एवं स्वर्ण मुद्रा पुस्तिका का विमोचन आए हुए गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में हुआ। स्वागत उद्बोधन एवं आचार्यश्री के प्रति विनयांजलि महासभा राजस्थान प्रांत के अध्यक्ष कमल बाबू जैन द्वारा किया गया। अपने प्रबोधन में उन्होंने आचार्य श्री को दिगंबरत्व का उद्धारक बताया। तत्पश्चात राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष रमेश तिजरिया, डॉ. पी सी जैन, श्री महावीर जी तीर्थक्षेत्र कमेटी अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल, गुणस्थली तीर्थ के अध्यक्ष अशोक अनोपड़ा, इंद्रा बड़जात्या, पं. रमेश गंगवाल, बैकर्स भागचंद जैन मित्रपुरा ने प्रथमाचार्य के प्रति उनके उपकारों का गुणगान करते हुए विनयांजली प्रस्तुत की। अपने संबोधन में आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि आचार्यप्रवर ने उत्तर भारत में विलुप्त प्राय दिगंबर धर्म में श्रमण संघ बनाकर, देश के अनेक भागों में विहार कर दिगंबर प्रथा को जीवंत किया। महामंत्री राजेंद्र बिलाला ने मंच संचालन किया एवं अन्त में भागचंद जैन ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में स्थानीय समाज के अनेक संस्थाओं के गणमान्य समाज श्रेष्ठीजन सुभाष चंद जौहरी, धर्म चंद पहाड़िया, चंद्र प्रकाश पहाड़िया, अनिल दीवान, आलोक तिजारिया, मनीष बैद, प्रदीप जैन लाला, विनोद जैन कोटखावदा, पदम बिलाला, नवीन जैन बिल्टीवाला, सुगन चंद जैन, विनीत चांदवाड, महेंद्र बैराठी, संजय पांड्या, कमलेश बोहरा, धन कुमार, राजेश गंगवाल, कमल चंद सेवा वाले, राजेंद्र पापड़ीवाल, सुरेश बज, समाज की अनेक धर्म परायण महिलाएं आदि कार्यक्रम के सहभागी रहे।

निःशुल्क नेत्र जांच एवं चश्मा वितरण शिविर का हुआ आयोजन

संवाददाता

श्री महावीर दिगंबर जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चैड़ा रास्ता, जयपुर में 487 विद्यार्थियों का निःशुल्क नेत्र परीक्षण किया गया, जिसमें से 88 विद्यार्थियों की नजर कमजोर पाई गई। उक्त 88 विद्यार्थियों को शीघ्र ही क्लब द्वारा निशुल्क चश्मे वितरित

किये जायेंगे। शिविर में क्लब अध्यक्ष लॉयन अनिल जैन आइ पी एस (सेवानिवृत्त), लॉयन सचिव विमल गोलछा, लॉयन कोषाध्यक्ष अनिल जैन, लॉयन अविनाश व्यास, लॉयन डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन, लायन सी के बाफना, लॉयन डॉ. णमोकार जैन, लॉयन अशोक लुहाडिया, लॉयन नेमी पाटनी आदि ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की।

जांच के समय विद्यालय की तरफ से सचिव श्री वीरेंद्र कुमार गोदिका आइ पी एस (सेवानिवृत्त), सह सचिव लायन अशोक लुहाड़िया, प्रधानाध्यापिका श्रीमती रिचा जैन समन्वयक श्री प्रदीप शर्मा उपस्थित थे।

यहीं पर लॉयन डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन ने क्लब के माध्यम से स्कूल की एक बालिका के लिए साल भर की शिक्षा सहयोग के रूप में राशि रू 10000/-प्रदान किए तथा यह राशि विद्यालय के सचिव श्री वी के गोदिका को सुपुर्द की।

संसार में सबसे बड़ा दुख का कारण परिग्रह

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

- आर्यिका पवित्रमति माताजी

नौगामा नगरी में परम पूज्य पवित्रमति माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में चातुर्मास कालीन वाचना में धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ रही हैं। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता सुरेश गांधी ने कहा कि 6 अक्टूबर को प्रातः सुखोदय तीर्थ नसिया जी 1008 भगवान महावीर समवशरण आदिनाथ मंदिर में विशेष शांति धारा अभिषेक के बाद जैन पाठशाला के छात्रों द्वारा पंडित रमेश चंद्र गांधी कुसुमलता नानावटी के सानिध्य में चातुर्मास पंडाल में सामूहिक रूप से पूजन की गई, पूजन के पश्चात सभी छात्रों को गांधी पंकज कुमार मोतीलाल की ओर से पुरस्कार वितरण किए गए। कार्यक्रम में माताजी का चातुर्मास पंडाल में आगमन होने के बाद बिंदिया पंचोरी द्वारा मंगलाचरण किया गया। मंगलाचरण के पश्चात बाहर से पधारे हुए अतिथियों का चातुर्मास समिति अध्यक्ष निलेश जैन, उपाध्यक्ष राजेंद्र गांधी, नरेश जैन, महेंद्र गांधी, अंतिम बाला गांधी, विमला पंचोरी, भारती पंचोरी, मुकेश गांधी द्वारा महिलाओं एवं पुरुषों का पगड़ी, माला, दुपट्टा उड़ाकर पहनाकर भव्य स्वागत किया गया, उपस्थित सभी धर्म प्रेमी बंधुओं द्वारा माताजी को प्रवचन हेतु श्रीफल चढ़ाकर विनती की गई। पवित्रमति माताजी, करणमती माताजी, गरिमामति माताजी का मंगल प्रवचन हुआ जिसमें माताजी ने अपने मंगल प्रवचनों में श्रृद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि संसार में मनुष्य के दुखों का सबसे बड़ा कारण है परिग्रह। इन दुखों को मिटाने के लिए हमें परिग्रह कम करना है एवं परिग्रह का परिमाण करना चाहिए साथ ही माताजी ने बताया कि आजकल मोबाइल का दुरुपयोग बढ़ता जा रहा है चाहे महिला हो, पुरुष या छोटे बच्चे हों, युवा हो दिन भर एक ही काम रहता है मोबाइल देखना और मोबाइल से कई दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं, माताजी ने कहा कि आगामी दिनों में पिच्छी परिवर्तन, सर्वतोभद्र विधान एवं दीक्षा जयंती बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाना है। चातुर्मास का समय कम बचा है जितना धर्म का लाभ ले सको लेना है। कार्यक्रम का संचालन दीपक पंचोरी द्वारा किया गया। उक्त जानकारी जैन समाज प्रवक्ता सुरेश चंद्र गांधी द्वारा दी गई।

आचार्य वसुनन्दी मुनिराज के अवतरण दिवस पर असहाय एवं गरीबों को किया भोजन वितरण

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 03.10.24। अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान - राजस्थान प्रान्त द्वारा परम पूज्य अभीक्षण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108 वसुनंदी जी महामुनिराज के 57वें अवतरण दिवस पर प्रांतीय अध्यक्ष पदम जैन बिलाला के नेतृत्व में असहाय, गरीब, निशक्त और जरूरतमंद लोगों को जे के लोन हॉस्पिटल के बाहर शाम को निशुल्क भोजन वितरण किया गया। कार्यक्रम में संरक्षक राकेश माधोराजपुरा व महामंत्री सुनील पहाड़िया ने बताया कि शुद्ध शाकाहारी भोजन हमने स्वयं तैयार करवाकर जे के लोन के गेट के पास दौ सो से भी अधिक व्यक्तियों को साफ पत्तल दोने में शाबाश इंडिया के संपादक राकेश गोदिका की गरिमामय उपस्थिति में भोजन वितरित किया गया। भोजन वितरण में संस्थान के भागचंद मित्रपुरा, राजीव लाखना, पंकज लुहाड़िया, कमल दीवान, महेश काला, महेंद्र बसवा, सिद्ध जैन मुकेश, बजरंग आदि ने सहयोग किया।

नवीन पिच्छिका के उपकरण सौंपकर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त कर अक्षय पुण्य अर्जित किया

फागी संवाददाता

धर्म परायण नगरी निवाई निवासी जयकुमार-श्रीमती नीरू जैन (पहाड़िया) एवं गोपाल लाल-श्रीमती रानी जैन (कठमाला) निवाई निवासी सपरिवारजनों ने झालरापाटन में चातुर्मासकालीन वाचना में विराजमान प्रज्ञासागर जी मुनिराज के पावन कर कमलों में नवीन पिच्छिका के उपकरण सौंपकर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त कर अक्षय पुण्य अर्जित किया। कार्यक्रम में संवाददाता राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए जानकारी पर बताया कि निवाई निवासी उक्त परिवार जन हर वर्ष सम्पूर्ण देश के विभिन्न क्षेत्रों में चातुर्मास कालीन वाचना में विराजमान मुनि संघों आर्यिकाओं सहित समस्त दिगम्बर संतों के संघों में निशुल्क नवीन पिच्छिका उपकरण सोंपकर अक्षय पुण्यार्जन प्राप्त करते आ रहे हैं। कार्यक्रम जयकुमार जैन एवं गोपाल लाल भाणजा से जानकारी पर ज्ञात हुआ कि वर्तमान में भाद्रमास आसोज मास एवं कार्तिक मास में ही मोर अपने पंखों को विसर्जित करते है और उन्हीं मोरपंखों को हम खरीद कर लाते है एवं पिच्छिका की डंडियां भी हम पानी में लम्बे समय तक भिगोकर उनमें बल डालते है बाद में चातुर्मासकालीन वाचना में देश में सम्पूर्ण दिगम्बर जैन संतों के संघों में हम वर्षों से नवीन मोर पंख-पिच्छिका उपकरण डंडिया-डोरियां निःशुल्क भिजवाते आ रहे है। अगर कोई भूल से रह जाय तो वहां का समाज सूचना देकर पिच्छिका उपकरण मंगवा सकता है। वात्सल्य वारिधी आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज, आचार्य सुनील सागर जी महाराज, आचार्य चंद्र सागर जी महाराज, आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज, आचार्य कनक नंदी जी महाराज, आचार्य इद्रनंदी जी महाराज, बालाचार्य निर्पूण नंदी जी महाराज, आचार्य कुंथु सागर जी महाराज, प्रज्ञा सागर जी मुनिराज झालरापाटन सहित देश के विभिन्न दिगम्बर जैन संतों के संघों के करकमलों में यह परिवार नवीन पिच्छिका उपकरण सौंपते हुए सभी संघों में जा रहे हैं। कार्यक्रम में झालरापाटन में विराजमान प्रज्ञासागर जी मुनिराज को नवीन पिच्छिका उपकरण सौंपते समय भामाशाह अनिल कुमार -उषा जी पांड्या बनेठा वाले, राजाबाबू गोधा-चित्रा गोधा फागी, जयकुमार-नीरू जैन निवाई, गोपाल लाल-रानी जैन निवाई, जैन राजनैतिक चेतना मंच के प्रदेशाध्यक्ष मुकेश चेलावत, झालरापाटन के यशोवर्धन बाकलीवाल सहित सारी चातुर्मास समिति के पदाधिकारी गण मौजूद थे।

भक्तामर की आराधना जीवन में संजीवनी का काम करती है

- गुरुमां विज्ञाश्री माताजी
संवाददाता

परम पूज्य भारत गौरव श्रमणी गणिनी आर्यिका गुरु मां 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सहस्रकूट विज्ञातीर्थ गुंसी राजस्थान की पावन धरा पर चातुर्मास चल रहा है। नवरात्रि एवं दशहरा के पावन अवसर पर 10 दिवसीय आराधना महोत्सव का भव्य आयोजन चातुर्मास समिति के द्वारा किया गया।

प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि इस महोत्सव में आज दूसरे दिन की भक्तामर दीपार्चना करने का सौभाग्य अशोक झांझरी राहोली जैन समाज के अध्यक्ष एवं मांग्यावास जयपुर से मुनिसुव्रतनाथ महिला मंडल एवं संदीप जैन रूपनगढ़ सपरिवार वालों ने प्राप्त किया। भक्तों ने अतिशयकारी श्री शांतिनाथ भगवान के चरणों में भक्ति भाव के साथ आराधना संपन्न कराई। एक-एक कर 48 दीपक चढ़ाये गये। प्रतीक जैन सेठी ने बताया कि पूज्य आर्यिका संघ की आहार चर्या करने का सौभाग्य मालवीय नगर सेक्टर 7 जयपुर समाज के प्रकाश जी शांतिलाल जी कमल जी जैन सपरिवार ने प्राप्त किया। भक्तामर स्तोत्र की महिमा का वर्णन पूज्य माताजी ने करते हुए कहा कि भक्तामर आराधना पंचमकाल का मानो साक्षात कल्पवृक्ष है। इसकी आराधना करने से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। रोग शोक बाधाएं नाश करने वाली यह अलौकिक भक्ति है। भक्तामर स्तोत्र सचमुच संजीवनी साक्षात उदाहरण है।

भक्तामर स्तोत्र पाठ के द्वारा 48 दीपकों से महाआरती

संवाददाता

फागी कस्बे के चन्द्रपुरी दिगम्बर जैन मंदिर में सायंकाल महावीर प्रसाद-श्रीमती मुन्नी देवी अजमेरा परिवार की अगुवाई में सकल दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से भक्तामर स्तोत्र के 48 काव्यों के द्वारा 48 दीपकों से महाआरती कर सुख समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई।

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज के अनमोल सूत्र

शत् शत् नमन वंदन

खत्म करना हो तो कषाय को खत्म करो

प्रभावना दिवाकर, श्रमण धर्म प्रभाकर, करूणा सागर, अहिंसा तीर्थ-प्रणेता, राष्ट्रसन्त, पंजाब श्रावक उद्धारक, सरलमना, ग्राम मन्दिर उद्धारक, इटावा गौरव, संस्कार प्रणेता, गुण-गौरव शिरोमणि, पुरूषार्थ के पुरूषोत्तम, श्रमण-गौरव, राजकीय अतिथि, राष्ट्रसन्त, बालयोगी के चरणों में शत-शत नमन

-: नमनकर्ता :-

श्रीमती प्रभा सेठी, गुवाहाटी
श्रीमती रिंकी सेठी, विजयनगर
श्रीमती सोनल पाटनी, कोलकाता
श्रीमती शिम्पल सेठी, आठगांव, गुवाहाटी
श्रीमती चन्द्रा बड़जात्या, गुवाहाटी
श्रीमती रूपा रारा, गुवाहाटी
सुभाष चूड़ीवाल, दिसपुर, गुवाहाटी
राजकुमार टोंग्या, रेहाबाड़ी, गुवाहाटी
विनोद कुमार गंगवाल, छत्रीबाड़ी, गुवाहाटी
पूर्वोत्तर प्रदेशीय दिगम्बर जैन महिला संगठन, गुवाहाटी
श्रीमती हेमा पाटनी, पान बाजार, गुवाहाटी
श्रीमती कुसुम बड़जात्या, गुवाहाटी

राजकीय अतिथि आचार्य श्री प्रमुख सागर जी महाराज दिसपुर में विराजमान है।

संकलन: R. K. Advertising शेखर पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता जैन गजट
मो - 09667168267 email: rkpatni777@gmail.com

सम्पादकीय

गुरू का शिष्य कैसा हो, वर्धमान सागर जैसा हो

यह वर्ष 2024-25 प्रथमाचार्य चरित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांति सागर जी महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव के रूप में मनाया जाएगा। वर्ष का शुभारंभ 13-15 अक्टूबर, 2024 तक पारसोला राजस्थान में हुआ। सम्पूर्ण देश के पांच हजार स्थानों पर महोत्सव समिति द्वारा प्रेषित ध्वजारोहण कर शुभारंभ हुआ जो इस वर्ष का ऐतिहासिक आगाज है।

सम्पूर्ण देश में प्रथमाचार्य व चारित्र चक्रवर्ती का नाम लेते ही शांतिसागर जी महाराज की सौम्य ध्वनि का अनुभव होता है। कर्नाटक के बेलगांव जिले के येलमुल भोजग्राम में सन 1872 को जन्मे सातगौडा ने जिनागम के सामने आई विपरीत परिस्थितियों का सामना किया। जब कोई दिगम्बर संत इस पृथ्वी पर नहीं था, अनेक वर्षों से दिगम्बर संतों के दर्शन को तरसती दुनिया के सामने श्रावक श्रेष्ठी भीमगौड़ा व सत्यवती के पुत्र सातगौड़ा ने संसार से विरक्त होकर सन 1915 में देवप्पा स्वामी से क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की। उपरांत सिद्धक्षेत्र गिरनार जी में ऐलक दीक्षा ग्रहण की। सन 1920 में कर्नाटक के यरनाल में आपने पंचकल्याणक महोत्सव के दौरान दिगम्बर मुनि दीक्षा ग्रहण कर देश के सामने एक दिव्य सन्देश प्रस्तुत किया। सन 1924 में संघ ने आपको समडोली में आचार्य पद प्रदान कर दिगम्बर जैन जगत में एक सक्षम समर्थ आचार्य प्रदान किया। एक संघ नायक श्रेष्ठ आचार्य के रूप में आपने सम्पूर्ण देश में भ्रमण कर दिगम्बरत्व का सन्देश प्रदान करते हुए जिनधर्म की अभूतपूर्व प्रभावना की। आदर्श निर्दोष चर्या का पालन करते हुए आपने दिगम्बर साधुओं को स्वतंत्र विचरण, आहार-विहार आदि का मार्ग प्रशस्त किया। दिगम्बर जैन धर्म को स्वतंत्र धर्म घोषित कराने व मिथ्यात्व में पड़ी समाज के सामने मिथ्यात्व से दूर होने के उपाय प्रस्तुत किये। श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक में भी आप ससंघ सम्मिलित हुए। अनेक श्रावकों को दीक्षा देकर आपने दिगम्बर परम्परा को नवीन ऊर्जा प्रदान की।

लगभग 35 वर्ष मुनि व 31 वर्ष तक एक समर्थ दिगम्बर आचार्य के रूप में आपने आदर्श स्थापित कर विलुप्त श्रमण परम्परा को प्रारंभ कर हम सबके जीवन में दिगम्बर मुनियों के दर्शन प्रारंभ कराये। आज 1400 से अधिक पिच्छीधारी संत दिगम्बर परम्परा का उद्घोष कर रहे हैं।

प्रथमाचार्य की पट्ट परम्परा में आचार्यश्री वीर सागर जी, आचार्य श्री शिव सागर जी, आचार्य श्री धर्म सागर जी, आचार्य श्री अजित सागर जी महाराज हुए। वर्तमान में वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज इस परम्परा के दीर्घ अनुभवी आचार्य के रूप में प्रतिष्ठापित हैं जिनके मार्गदर्शन में सन 1920 में मुनिश्री शांतिसागर जी महाराज का मुनिदीक्षा शताब्दी समारोह उनकी दीक्षा स्थली यरनाल में मनाया गया था। आचार्य संघ ने वहां दीक्षा स्थली तीर्थ के रूप में यरनाल का विकास किया। उपरांत आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज ने अपने आपको इस परम्परा में समर्पित करते हुए अपना चर्याकाल आचार्य शांतिसागर जी महाराज के जीवन वृत के अनुशरण में लगाया है। वे अपनी सम्पूर्ण चर्या में प्रथमाचार्य की परम्पराओं को ही श्रेष्ठ बताते हुए संघ को उसके अनुपालन हेतु निर्देश प्रदान करते हैं। आचार्य वर्धमान सागर जी अपने सम्पूर्ण कार्य गुरू की गरिमा में ही समर्पित कर रहे हैं। एक परम्परा के आचार्य का अपने पूर्वाचार्यों के प्रति इतना अनुराग अभूतपूर्व है।

देश के सबसे बड़े आयोजन अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक में तीन बार अपना सान्निध्य प्रदान कर वहां उपस्थित होने वाले विभिन्न परम्पराओं के आचार्य, मुनि आदि के बीच सामंजस्य, समन्वय के साथ सबको साथ लेकर उत्तर दक्षिण की परम्पराओं में साम्य स्थापित करना आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज की अद्भुत विशेषता है। वे अपने जीवन में अनेकांत स्याद्वाद की साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। उनका कभी भी किसी के प्रति आग्रह-दुराग्रह का भाव नहीं है। आपकी आनंदमयी मुद्रा सबके आकर्षण का केन्द्र है। आपके मार्गदर्शन में हो रहे आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव का अद्भुत आयोजन हो रहा है जिसमें जिनवाणी की सेवा व स्वावलम्बी योजना बहुत ही उल्लेखनीय है। इस योजना के तहत जिनवाणी का संरक्षण किया जाएगा। जिनवाणी जो ताड़पत्रों के रूप में अनेक मंदिरों में रखी है वह मौसम से खराब हो रही है उसे केमिकल ट्रीटमेंट कर सुरक्षित कर डिजीटलाईजेशन किया जाएगा, जो बहुत ही प्रासंगिक है।

स्वालम्बी योजना के तहत आर्थिक विपन्नजनों को स्वरोजगार हेतु मदद की जाएगी। अन्य प्रकल्प भी होंगे लेकिन ये दो प्रकल्प समाज के स्तर पर अत्यन्त प्रासंगिक हैं। जब आचार्य वर्धमान सागर जी ससंघ में भी चर्चा होती है तो उनका भी अपने परम्पराचार्यों के प्रति समर्पण उल्लेखनीय है इसलिए आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के प्रति सबके मन से निकलता है कि -

''गुरू का शिष्य कैसा हो - आचार्य वर्धमान सागर जैसा हो''।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी के प्रति समर्पित आचार्य वर्धमान सागर जी जयवंत हों।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद,
सह सम्पादक

''हमारा भविष्य कैसा होगा?'' : एक गहन चर्चा

डॉ. संतोष जैन काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

''हमारा भविष्य कैसा होगा?'' विषय पर आधारित लेख में यह समझाया जा सकता है कि वर्तमान में किए गए कर्म और भाव ही हमारे भविष्य को निर्धारित करते है। इसे विस्तृत रूप से समझाने के लिए हम कई दृष्टांत, उदाहरण और प्रसिद्ध विचारकों के कोट्स का उपयोग कर सकते हैं। लेख का प्रमुख संदेश यह होगा कि हमारी वर्तमान भावनाएं और विचार ही हमारे भविष्य के बीज होते हैं और जैसे बीज होते है, वैसा ही फल मिलता है।

1. प्रस्तावना: भविष्य किसी चमत्कार या संयोग से नहीं बनता, बल्कि यह हमारे वर्तमान के कर्मों और भावनाओं का परिणाम होता है। हमारी जीवन शैली, आचरण और दृष्टिकोण हमारे भाग्य को आकार देते हैं। जैसे एक बीज बोने पर पेड़ उगता है और फिर उससे फल मिलता है, वैसे ही हमारे कर्म और भाव हमारे जीवन में घटनाओं के रूप में प्रकट होते है।

2. कर्म और भाव: भविष्य के बीजः जैन धर्म की दृष्टि से कर्म हमारे जीवन में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना बीज पेड़ के लिए होता है। जिस प्रकार कोई भी बीज बिना सही देखभाल के वृक्ष नहीं बन सकता, वैसे ही बिना उचित भाव और संकल्प के कोई अच्छा कर्म संभव नहीं होता।

महात्मा गांधी ने कहा था, ''आपके विचार ही आपका भविष्य बनाते है।'' इसी प्रकार, जैन दर्शन में भावों को सर्वोपरि माना गया है। कर्म तो एक साधन है, लेकिन कर्म की उत्पत्ति स्थान हमारे भाव हैं।

3. संक्लेश भाव: दुख और अशांति के बीजः संक्लेश भाव वे होते हैं जो व्यक्ति को दुख, अशांति और अनैतिकता की ओर धकेलते है। इन भावों का उदाहरण क्रोध, घृणा, ईर्ष्या और अज्ञानता है।

उदाहरण: महाभारत के कौरवों का पतन उनके अहंकार और संक्लेश भावों के कारण हुआ।

कोट: ''जो व्यक्ति दूसरों को हानि पहुंचाने का प्रयास करता है, वह स्वयं को ही हानि पहुंचाता है।'' - भगवद गीता

संक्लेश भावों के कारण व्यक्ति का जीवन दुखमय हो जाता है और यह उसे निम्न गति की ओर धकेलते हैं, जैसे नरक या तिर्यंच गति।

4. विशुद्ध भाव: शांति और प्रगति के बीजः विशुद्ध भाव उन भावों को कहते है जो व्यक्ति को नैतिकता, संयम और संतोष की ओर ले जाते हैं। ये भाव मानवता के प्रति दया, सत्य और धर्म की भावना उत्पन्न करते है।

उदाहरणः पांडवों का धर्म और विशुद्ध भाव ही उनके विजय का कारण बने।

कोट: ''सत्य मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति अंततः विजय प्राप्त करता है, भले ही वह मार्ग कठिन हो।'' - महात्मा गांधी

विशुद्ध भावों से व्यक्ति को मनुष्य या देव गति प्राप्त होती है, जो कि जीवन के सुखद अनुभवों का प्रतीक है।

5. शुद्ध भाव: मोक्ष की ओर मार्गः शुद्ध भाव का अर्थ है संपूर्ण शांति और निर्विकारता। इस स्थिति में कोई संक्लेश या विशुद्ध भाव नहीं होते, केवल आत्मलीनता और समता होती है।

उदाहरण: भगवान महावीर का जीवन शुद्ध भावों का प्रतीक है, जिन्होंने अंततः मोक्ष प्राप्त किया।

कोट: ''शुद्ध भावों से ही मोक्ष का मार्ग संभव है।'' - जैन आगम

6. वर्तमान में कर्म और भावों का महत्वः यह जीवन का सरल गणित है कि जो हम आज बोएंगे, वही कल काटेंगे।

उदाहरण: एक किसान जो अच्छे बीज बोता है, वह निश्चित रूप से अच्छे फसल की उम्मीद कर सकता है। इसी प्रकार, जो व्यक्ति अपने भावों को नियंत्रित करता है, वह जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त करता है।

कोट: ''वर्तमान कर्मों पर ध्यान देना ही भविष्य को सुनहरा बना सकता है।'' - अज्ञात

निष्कर्ष: हमारा भविष्य हमारे वर्तमान कर्मों और भावों पर निर्भर करता है। जैसा हमारा आज होगा, वैसा ही हमारा कल बनेगा। इसलिए हमें अपने भावों को सही दिशा में मोड़ने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि भविष्य में हमें उन कर्मों के उत्तम फल मिल सकें।

''हम जैसा बीज बोएंगे, वैसा ही फल पाएंगे।''

साइबर ठगी का बढ़ता दायरा, सज्जनों पर संकट

विजय कुमार जैन, राघौगढ़

आधुनिक संचार क्रांति के युग में मोबाइल एवं इंटरनेट जितने लाभदायक हैं उससे ज्यादा हानिकारक भी हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट के माध्यम से भारत ही नहीं दुनिया में आए दिन साइबर ठगी की घटनाएं सुनने में आ रही हैं। साइबर अपराध करने वालों की गैंग जानबूझकर ऐसे समय संबंधित को निशाना बनाते हैं जब वह विचार ही नहीं कर पाता और उनके द्वारा जितनी राशि की मांग की जाती है तत्काल उनके खाते में डाल देते हैं। इसके बाद पछतावा ही हाथ रहता है। मैं साइबर ठगी की कुछ घटनाओं का यहां पर उल्लेख करना चाहूंगा।

गुना जिले में श्री द्वारका प्रसाद शर्मा महिला बाल विकास विभाग में लिपिक हैं, इनको अपरिचित मोबाइल से फोन आया और मोबाइल नंबर का केवाईसी करने की बात कही ओटीपी पूछा और बैंक खाते से रू. 16000/- निकाल लिये। श्री बलवीर सिंह गुर्जर निवासी साडा कॉलोनी राघौगढ़ सेवानिवृत्त गुना तहसीलदार रीडर इनके पंजाब नेशनल बैंक शाखा साडा कॉलोनी राघौगढ़ के खाते में किसी ने रू. 1/- जमा किया उन्होंने जैसे ही मोबाइल खोलकर बैंक अकाउंट देखा उनके बैंक खाते से पहली बार रुपए 9970, दूसरे बार 9999 कट गए, उन्होंने तत्काल बैंक शाखा में जाकर अपना खाता ब्लॉक कराया।

रुठियाई तहसील राघौगढ़ निवासी रविंद्र सिंह परिहार के पास फोन आया और बताया कि आपका बेटा पुलिस थाने में बैठा है उन्होंने कहा कि मेरा बेटा तो नौकरी पर है उधर से कहा आपका बेटा एक लड़की के साथ होटल में अनैतिक कार्य करते हुए पकड़ा गया है। अपने बेटे को बचाना है तो तत्काल तीन लाख रुपए खाते में डालो। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा बेटे को फोन लगाओ। उन्होंने बेटे से पूछा कहां हो, बेटे ने कहा कि मैं तो ऑफिस में हूं फिर उन्होंने जिनका फोन आया था बेटा का फोन कनेक्ट कर बात करवायी। बेटे ने उनसे भला बुरा कहा तब फोन काट दिया। एक सेवानिवृत अधिकारी जिनकी लड़की इंदौर में पढ़ती है घटना चार माह पुरानी है उनके पास फोन आया आपकी बेटी थाने में बैठी है अनैतिक स्थिति में होटल में पकड़ी है उन्होंने दूसरे नंबर से बेटी को फोन लगाया, बेटी कॉलेज में थी फोन बंद था, इस कारण बात नहीं हो सकी। जिनका फोन आया था उन्होंने कहा अपनी बेटी को बचाना चाहते हो तो तत्काल रू. 6 लाख रुपए खाते में डालो, घबराहट में उन्होंने तीन लाख रुपये खाते में भेज दिये फिर लड़की का फोन आया कि पापा जी फोन क्यों किया। तब उन्होंने सारी घटना बतायी। उनके साथ साइबर ठगी हो गई। मैं स्वयं भी साइबर ठगी से होते-होते बचा फोन आया मेरे से कहा कि आपके मोबाइल नंबर की केवाईसी होना है मैंने उनसे कहा मेरा नंबर तो एयरटेल का है अब बी एस एन एल में केवाईसी क्यों हो रही है तो उधर से जवाब आया आपकी सिम पुरानी है पहले बी एस एन एल की थी इसलिए आपको 24 घंटे के अंदर केवाईसी करना आवश्यक है अन्यथा सिम बंद हो जाएगी। मैंने उनसे पूछा कि मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कि हम आपको एक प्रोफार्मा भेज रहे हैं उसमें हम जो जानकारी पूछें उनका आप मोबाइल चालू रखकर हमें जवाब देते जाएं। मैंने उनके कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए थोड़ी देर बाद मेरी पौत्री 14 वर्षीय तन्वी जैन मेरे पास आई और बोली दादाजी मुझे ऐसा लग रहा है आप साइबर ठगी के शिकार होने वाले हैं। आप तत्काल इस नंबर को काट दें और इस नंबर को ब्लॉक कर दें। इस प्रकार में साइबर ठगी से बच पाया। साइबर ठगी की ही यह घटना मेरे मित्र श्री राघवेंद्र सिंह परिहार सेवानिवृत्ति कृषि अधिकारी राघौगढ़ ने मुझे बताया मैं ऑनलाइन दवाइयां मंगाता था। उनके लिए अपरिचित नंबर से फोन आया और कहा कि आप जिस कंपनी से दवाइयां ऑनलाइन मांगते हैं उस कंपनी ने ड्रा निकाला है ड्रा में आपके नाम कार निकली है आपको बधाईयां। परिहार जी ने उनसे पूछा मुझे क्या करना है उन्होंने कहा कार तो हम आपके लिए कोलकाता में डिलीवरी दे देंगे या फिर आप कहेंगे तो आपके निवास पर पहुंचा देंगे। आपको मात्र इतना करना है आप रजिस्ट्रेशन के पैसे हमारे खाते में डाल दो। उन्होंने कहा मेरा भतीजा कोलकाता में ही सर्विस में है वह आपसे मिलेगा कहां मिलना है पता आप मुझे भेजिए दूसरी ओर से पता नहीं आया और वह साइबर ठगी से बच गये। पिछले माह एसिया के बड़े उद्योगपति ओसवाल ग्रुप लुधियाना के मालिक की भारत की संभवतः अभी तक की सबसे बड़ी सायवर ठगी हुई। यह ठगी साढ़े सात करोड़ रुपये की थी। इस सायवर ठगी का समाचार देश के अनेक समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित हुआ। वर्तमान में साइबर ठगी की घटनाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है। आम भोले भाले नागरिक उनके जाल में फंसकर अपना नुकसान कर रहे हैं। मोबाइल एवं इंटरनेट का उपयोग करते समय हर व्यक्ति की जागरूकता आवश्यक है। के वाई सी के झांसे में ना आए ओटीपी ना भेजें।

दीपावली से पहले विशेष योग में करें खरीददारी

अधिकांशतः लोग दीपावली पर खरीददारी करते हैं। इस बार भी दीपावली पर खरीददारी के विशेष योग बन रहे हैं।

वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य डॉ. हुकुमचंद जैन ने जानकारी में कहा कि जब किसी कार्यों को करने के लिए कार्य विशेष मुहूर्त नहीं मिलता तब भी सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, रवि योग, द्विपुष्कर योग, त्रिपुष्कर, रविपुष्य, गुरुपुष्य योगों में चर, शुभ, लाभ, अमृत की चैघड़िया में कार्य करने से सफलता मिलती है।

शारदीय नवरात्रि से दीपावली तक इस वार नौ दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, दो दिन अमृत **सिद्धि योग, छः** दिन रवि योग एक दिन त्रिपुष्कर योग एक दिन गुरुपुष्य योग निर्मित हो रहे है जिसमें दीपावली से सात दिनों के अंदर ही गुरुपुष्य योग 24 अक्टूबर के दिन पूरे दिन रात बनेगा। इस योग को श्रेष्ठ योगों की संज्ञा दी गई है। इसमें स्वर्ण, चांदी के आभूषण, कपड़े, मकान, वाहन खरीदना लाभदायक है इसके बाद धन त्रयोदशी के दिन त्रिपुष्कर योग सूर्योदय से 10:33 बजे तक है इस योग की विशेषता यह है कि जो भी वस्तु की प्राप्ति होती हैं तो दो बार और वह वस्तु मिलती है।

जैन ने कहा जिस योग का जैसा नाम वैसा ही वो फल देता है। सर्वार्थ सिद्धि योग में सभी कार्य विना विघ्न बाधा के पूर्ण होते है। अमृत सिद्धि योग में कार्यों का फल अमृत के समान अर्थात स्थाई प्राप्त होता हैं। रवि योग सम्पूर्ण कुयोगों का हरण करता है।

कब किस दिन कितने बजे कोन सा योग रहेगा -

सर्वार्थ सिद्धि योग -

05 - अक्टूबर को प्रातः 06:17 से 21:23 बजे तक, 07 - को प्रातः 06:18 बजे से रात 02:25 बजे तक, 12 - को प्रातः 06:21 बजे से रात 04:27 बजे तक, 15 - को रात 10:08 बजे से पूरी रात सुबह 06:23 बजे तक, 17 - को प्रातः 06:24 बजे से दिन रात, 18 - को प्रातः 06:24 बजे से 13:26 बजे तक, 21 - को प्रातः 06:26 बजे से दिन रात, 24 - को प्रातः 06:28 बजे से दिन रात, 30 - को प्रातः 06:32 बजे से 21: 43 बजे तक।

रवि योग - 06 - को प्रातः 06:17 बजे से रात 12:11 बजे तक, 08 - को प्रातः 0618 बजे से रात 04:08 बजे तक, 12 - को प्रातः 06:21 बजे से दिन रात, 13 - को प्रातः 06:21 बजे से दिन रात, 16 - को प्रातः 06:23 बजे से 19:18 बजे तक, 22 - को 06:27 बजे से दिन रात।

त्रिपुष्कर योग - 29- को प्रातः 06:31 बजे से 10:31 बजे तक।

गुरुपुष्यामृत योग -

24- को प्रातः 06:28 बजे से दिन रात रहेगा। वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य डॉ. हुकुमचंद जैन ने कहा कि उपरोक्त सभी योगों में भूमी, प्लाट, मकान, दुकान वाहन, इलेक्ट्रॉनिक सामान, आभूषण, वर्तन कपड़े आदि खरीदे जा सकते हैं।

वरिष्ठ ज्योतिषाचार्य
डॉ. हुकुमचंद जैन

संस्कृति यूथ फाउंडेशन द्वारा स्वच्छता अभियान का नेतृत्व

संस्कृति यूथ फाउंडेशन द्वारा आज दिल्ली के छठ घाट पर सैकड़ों युवाओं ने यमुना स्वच्छता अभियान में भाग लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने हमेशा कहा है कि 'स्वच्छता सेवा है' और 'स्वच्छ भारत' का सपना साकार करने में हम सभी की जिम्मेदारी है। इस अभियान में युवाओं की भागीदारी यह दिखाती है कि वे अपने समाज को स्वच्छ और स्वस्थ बनाने के प्रति जागरूक है। दिल्ली में बीजेपी के नॉमिनेटेड निगम पार्षद और वरिष्ठ नेता, श्री मनोज कुमार जैन ने संस्कृति यूथ फाउंडेशन के साथ मिलकर इस सफाई अभियान का नेतृत्व किया। छठ पर्व से पहले, हर वर्ष समाजसेवी संस्थाएं और राजनीतिक दल छठ घाट की सफाई करते हैं, और इस कार्य को लेकर अक्सर राजनीति भी होती है। इस अवसर पर दिल्ली बीजेपी के वरिष्ठ नेता और निगम पार्षद श्री मनोज कुमार जैन ने कहा कि नदियों को पवित्र रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे राजनीति से ऊपर उठकर अपनी पूजनीय नदियों का सम्मान करें और उन्हें स्वच्छ बनाए रखें। इस अभियान में संस्कृति यूथ फाउंडेशन के सैकड़ों युवा स्वयंसेवक भी शामिल थे, जो यमुना की स्वच्छता के प्रति समर्पित है।

संस्कारों में रहने वाला सौभाग्यशाली होता है

- आचार्य सुनील सागर

मदनगंज किशनगढ़। वर्षायोग समिति के तत्वावधान एवं आचार्य सुनील सागर महाराज ससंघ के सानिध्य में धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सुबह आर. के. कम्युनिटी सेंटर में श्रीजी का अभिषेक व शांतिधारा की गई। शांतिधारा संपतराज कासलीवाल, संजय जैन, राजकुमारी जैन, रमेश सेठी परिवार के साथ अन्य श्रद्धालुओं ने की। वर्षायोग समिति के संयोजक कैलाश पाटनी ने बताया कि सन्मति समवशरण में धर्मसभा का शुभारंभ सम्पतराज, नवनीत, ऋषभ कासलीवाल, पदमचंद, संजय कुमार, राजकुमारी, नैतिक, प्रिंसी जैन, सरला, विकास, शीतल, प्रियांशु शाह मुंबई, कुशलगढ़ विधायक रमिला ने चित्र अनावरण, दीप प्रज्ज्वलित, आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन व शास्त्र भेंट करके किया। कार्यक्रम में कुशलगढ़ विधायक रमिला के साथ अतिथियों का स्वागत श्री मुनिसुव्रतनाथ पंचायत एवं वर्षा योग समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने किया। तपोवन आर्ट ग्रुप दिल्ली के डायरेक्टर सौरभ जैन एवं कलाकारों द्वारा तीर्थ

संरक्षण पर लघु नाटिका की प्रस्तुति देकर लोगों को धर्म के साथ तीर्थ यात्रा एवं तीर्थों के संरक्षण का संदेश दिया। धर्मसभा में आचार्य सुनील सागर महाराज ने धर्मोपदेश देते हुए कहा कि माता-पिता को परिवार की युवाओं को ऐसे संस्कार देना चाहिए कि वह भारत को छोड़कर पश्चात संस्कृति को नहीं अपनाए। बहुत कम लोग हैं जो अपने संस्कार एवं आचार विचार को सुरक्षित रख पाते हैं। आजीविका एवं प्रलोभन अलग-अलग है। आजीविका अपने देश अपने गांव में भी कमाई जा सकती है, लेकिन प्रॉब्लम के चक्कर में लोग अपनी संस्कृति और परिवार को छोड़कर विदेश चले जाते हैं। बुजुर्गों, धर्म, तीर्थ, मंदिर संभाल, मुनियों की सेवा करना युवाओं के लिए कठिन होता जा रहा है, लेकिन धर्म ही जीवन है। जीवन में सच्चाई, साहस, समर्पण है तो जीने का आनंद है। जो जिंदगी देता है उसके लिए समय निकालना चाहिए। जिंदगी माता-पिता देते है, गुरु जिंदगी जीना सिखाते हैं और धर्म जिंदगी को आनंदित करता है। संस्कारों में रहने वाला सौभाग्यशाली होता है। जैसी सोच वैसा ही व्यक्ति बनेगा और जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल मिलेगा। जागृत समाज मुनियों के बल पर ही जिन शासन की प्रभावना कर सकता है। धर्म एवं समाज के लिए युवा पीढ़ी को जागृत करना बहुत जरूरी है। समय का नियोजन करना आना चाहिए। इंसान को अपना जमीर कभी नहीं बेचना चाहिए। अहिंसा सत्य के बल पर दुनिया का उत्थान, शाकाहार, सदाचार के बल पर विश्व का कल्याण होगा। हिंसा किसी भी विषय का आधार नहीं होती है। ज्ञानी का निवास उसकी अपनी आत्मा में होता है। देह में आत्मा बुद्धि नहीं होती है। चेहरे को देखकर नहीं वीतराग दिगंबर मुद्रा देखकर ही दिगंबर मुनि की आराधना करनी चाहिए। देह आत्मा नहीं है इसीलिए चित्र नहीं चरित्र बचता है और जिनका चरित्र उज्जवल रहा उन्हें हम वंदन करते हैं। दिगंबर जैन मुनियों ने सदैव देह व आत्मा को भिन्न है इसको साबित किया है। स्वयं की आत्मा ही स्वयं का गुरु होता है। गुरु सदा मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं।

वर्षायोग समिति के सह संयोजक प्रकाश काला ने बताया कि आर. के. कम्युनिटी सेंटर में दोपहर में सामयिक, स्वाध्याय, शाम को पण्य पुच्छा एवम आरती की गई। सन्मति समवशरण में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर महाराज के आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी वर्ष महा महोत्सव के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रम में सन्मति समवशरण में तपोवन आर्ट ग्रुप दिल्ली के डायरेक्टर सौरभ जैन द्वारा बज्रबाहू का वैराग्य नाटक की प्रस्तुति दी। कलाकारों की शानदार मनमोहक प्रस्तुति से माहौल भक्तिमय हो गया। **-संजय जैन, संवाददाता**

शेष पृष्ठ 3 का.....

राज्यपाल श्री गुलाबचंद कटारिया का अभिनंदन जयंतीलाल कोठारी, ऋषभ पचोरी आदि ने किया। समारोह में ताराचंद जैन विधायक, छगनलाल जैन, दिनेश खोड़निया, अनिल सेठी, राजेन्द्र कटारिया, संजय पापड़ीवाल, राकेश सेठी, सहित संपूर्ण भारतवर्ष के श्रेष्ठी व राजस्थान के समाजजन बड़ी संख्या में उपस्थित हुए।

रुपेश जैन की भजन संध्या में झुमे श्रद्धालु

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में युवा गीतकार रुपेश जैन की भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें रुपेश जैन ने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के जीवन को समाहित करते हुए शानदार भजन सुनाकर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर किया। आचार्य शांतिसागरजी महाराज के जीवन वृत्त पर नटेश्वर नृत्य संस्थान बड़वाह के संजय महाजन के निर्देशन में नृत्य नाटिका आयोजित की गई जो सराहनीय रही। आयोजन में दक्षिण भारत के बैण्ड आकर्षण का केन्द्र बने। देशभर से आए भट्टारकजी ने दी विनयांजलि परम्परा आचार्य स्मृति वंदन के अंतर्गत 15 अक्टूबर को दक्षिण भारत में स्थापित देश के प्रमुख भट्टारकगण उपस्थित हुए और प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित की। स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी श्रीक्षेत्र मूडबद्री, स्वस्तिश्री भानुकीर्ति भट्टारक स्वामी श्री क्षेत्र नांदणी, स्वस्ति श्री लक्ष्मीसेन भट्टारक, स्वामी श्री क्षेत्र कोल्हापुर, स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामी, श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला आदि ने अपनी उपस्थिति प्रदान कर आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज की चरण वंदना कर आशीर्वाद ग्रहण किया व सभी ने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के उपकारों का वर्णन किया।

मुनिश्री पुण्यसागरजी, मुनिश्री अपूर्वसागरजी, मुनिश्री हितेन्द्रसागरजी, मुनिश्री मुमुक्षुसागरजी आदि व आर्यिका महायशमति माताजी, दिव्यशमति माताजी, शुभमति माताजी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज की प्रतिमा का लोकार्पण संस्कार हुआ यह दिव्य प्रतिमा प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर उद्यान पारसोला में स्थापित होगी।

मेवाड़ वागड़ के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने शांतिसागरम में लगे आचार्य शांतिसागर चल छाया चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इसके बाद सौधर्म इन्द्र सहित समस्त इन्द्र इन्द्राणी द्वारा प्रथमाचार्य शांतिसागर की महाअर्चना करते हुए अर्धय समर्पित किया। कार्यक्रम में धरियावद विधायक थावरचंद डामोर, पूर्व विधायक नगराज मीणा, जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह राणावत, उपजिलाप्रमुख सागरमल बोहरा सहित प्रतिनिधियों ने ससंघ का आशीर्वाद लिया। भट्टारक स्वामी ने शांतिसागर महाराज की प्रतिमा के पट्ट खोले। शताब्दी महोत्सव की केंद्रीय कार्यकारिणी के राकेश सेठी, राजेन्द्र कटारिया, किरण सातगौंडा पाटिल, राजेश बी शाह, संजय पपडीवाल, जयंतीलाल कोठारी, ऋषभ लाल पचैरी, सम्पतिलाल सेठ, महावीर मैदावत, सूरजमल कड़वावत, दिनेश कड़वावत, प्रवीण पचैरी सहित सदस्यों ने कार्यक्रम में भामाशाहों व सहयोगकर्ता का अभिनंदन किया। समापन से पूर्व अध्यक्ष अनिल सेठी ने शताब्दी महोत्सव के उद्घाटन की घोषणा कर धर्म ध्वज को समिति को सौंपा और अक्टूबर 2025 तक पूरे भारतवर्ष में आयोजन करने का आह्वान किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ महोत्सव का समापन हुआ। श्रीजी व प्रथमाचार्य की पुण्यार्जक परिवार द्वारा गजरथ पर सवार होकर पूरे नगर में बैंडबाजों व ढोल नगाड़ों के साथ नाचते गाते भ्रमण करते हुए शांतिसागरम पहुंचे और मंगल आरती उतारी गई। पारसोला समाज के बालक बालिका युवा व महिलाओं के 40 से ज्यादा मंडलों ने कार्यक्रम को भव्य बनाया। प्रथमाचार्यजी के गृहस्थ परिजन किरण रेखा पाटिल (भोज), सतीश पाटिल (समडोली) का सम्मान भी किया गया। त्रिदिवसीय आयोजन में देशभर के श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कर अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित किया।

उल्लेखनीय है कि आचार्य पद प्रतिष्ठापन शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत 2024-25 में वर्षभर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। जो ध्यावे सो पावे ध्वज लोकार्पण, पाँच हजार स्थानों पर हुआ महोत्सव समिति के अध्यक्ष अनिल सेठी, महामंत्री राकेश सेठी, रीजनल डायरेक्टर हसमुख गांधी ने बताया कि प्रथमाचार्य शांतिसागरजी महाराज की आचार्य पदारोहण शताब्दी महोत्सव का शुभारंभ एक विशेष ध्वज के ध्वजारोहण के साथ देशभर में किया गया। देशभर के पांच हजार से अधिक स्थानों पर 13 अक्टूबर को प्रातः 7.30 बजे एक साथ ध्वज वंदन कर ध्वजारोहण हुआ। संपूर्ण देश में ध्वज समिति द्वारा पहुंचाये गए, जिन्हें विशेष रूप से डिजाईन किया गया। अभूतपूर्व उत्साह के इस आयोजन में संपूर्ण देश ने शांतिसागरजी की महिमा को जाना। आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के मार्गदर्शन में हुए आयोजन ने अपने उद्देश्य को प्राप्त किया।

शिक्षिकाओं द्वारा बच्चों को कराये मुनिश्री के दर्शन

राज कुमार अजमेरा, संवाददाता

श्री दिगंबर जैन समाज झुमरीतिलैया कोडरमा के अंतर्गत चलने वाले श्री दिगंबर जैन आचार्य विद्यासागर प्रामाणिक पाठशाला के शिक्षिकाओं द्वारा दिनांक 6 अक्टूबर दिन रविवार को पाठशाला के सभी बच्चों को जैन गुरु पूज्य मुनि श्री 108 सुयश सागर जी मुनिराज का दर्शन करने मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज की जन्म स्थली हजारीबाग ले जाया गया, जहां पर सभी शिक्षिकाओं और बच्चों ने पूज्य गुरुदेव के चरणों में श्रीफल के साथ अष्ठ द्रव्य से पूजन कर अर्घ्य समर्पण किया और सभी ने गुरुवर का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट कर अपने जीवन को धन्य बनाया। गुरुदेव ने सभी बच्चों और पाठशाला के प्रति समर्पित सभी को दोनों हाथों से मंगल आशीर्वाद दिया। संध्या में गुरुवर के द्वारा णमोकार चालीसा कार्यक्रम में सर्वप्रथम विद्यासागर पाठशाला कोडरमा के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया उसके पश्चात हजारीबाग समाज के सभी पदाधिकारी के द्वारा सभी भक्तों को तिलक, माला, दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया, स्वागत के पश्चात गुरुवर ने अपने मंगल आशीर्वाद में कहा कि भारत में अगर बच्चों में भक्ति देखनी है तो कोडरमा के बच्चों में देखो। मेरे 2023 के चातुर्मास में कोडरमा में सभी बच्चों में संस्कार देखने को मिला सभी बच्चों को जब भी समय मिलता पूजा अभिषेक के साथ संध्या में णमोकार चालीसा में पूरा सरस्वती भवन भरा रहता था। सभी बच्चों में भक्ति अपरंपार है। कोडरमा की पाठशाला बहुत सुव्यवस्थित तरीके से बच्चों को संस्कारित कर रहा है। कोडरमा में धर्म का प्रभाव बच्चे ही नही सभी वर्गों में कूट कूटकर भरा है। इस अवसर पर हजारीबाग समाज के कपूर चंद-जी प्रेमा जी, राजेश जी लुहाड़िया परिवार के द्वारा सभी बच्चों को प्रभावना के रूप में गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया, साथ ही कोडरमा समाज के बच्चों ने अपने आराध्य गुरु श्री 108 सुयश सागर मुनिराज से पुनः कोडरमा आगमन के लिए श्रीफल भी समर्पित किया। पाठशाला की संयोजिका सुनीता सेठी, रानी छाबड़ा, जूली लुहाड़िया, मोना छाबड़ा नीलम सेठी, रेखा झांझरी, संगीता छाबड़ा, क्षमा सेठी, रिंकू गंगवाल, कल्पना सेठी, रेखा झांझरी, प्रियंका छाबड़ा, सीमा जैन, किरण ठोल्या, किरण बड़जात्या, समाज के एवं पाठशाला के प्रचार प्रसार मंत्री श्री राज कुमार जी अजमेरा एवं ईशान कासलीवाल सभी बच्चों के साथ गए। इनके साथ ही समाज के पूर्व मंत्री श्री ललित जी भी उपस्थित रहे।

लंदन में ब्र. जय निशान्त जी द्वारा अभूतपूर्व प्रभावना

ललितपुर। लंदन हैरो श्री शांतिनाथ जिनालय में पर्यूषण पर्व के अवसर पर प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के निर्देशक व अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद के महामंत्री ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत भैया जी द्वारा पर्युषण पर्व की बेला में अभूतपूर्व धर्म प्रभावना की गई, जिसमें सभी श्रावक श्राविकाओं ने अभिषेक, शांति धारा, पूजा एवं दशलक्षण विधान के साथ उपवास, एकाशन, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण एवं ध्यान के माध्यम से पर्युषण पर्व में संयम पूर्वक धर्माचरण किया।

अभूतपूर्व प्रभावनाः प्रचारमंत्री डॉ. सुनील जैन संचय ने बताया कि इंग्लैंड के प्रसिद्ध लाइका रेडियो एवं टीवी चैनल के माध्यम से साक्षात्कार करते हुए जयनिशांत भैया जी ने वहां के संचालक श्री रवि शर्मा एवं श्रीमती अलका जैन के माध्यम से संपूर्ण इंग्लैंड में प्रसारित होने वाले कार्यक्रम में दशलक्षण पर्व के बारे में बताते हुए विश्व मैत्री, सदभावना, वात्सल्य के पर्व के रूप में तथा मानवीय विकृति क्रोध, मान, अहंकार, ईर्ष्या, परस्पर विद्वेष आदि को दूर करते हुए संयम साधना करके अपने मन को शुद्ध करना बताया। अपने शरीर, वाणी एवं मन से होने वाली हिंसा को कम करते हुए अपने चित्त को, परिणामों को शांत रखना, विपरीत परिस्थिति में भी हम अपने आप को स्थिर रखते हुए सदभावना बना कर रखें। जैन धर्म आत्मधर्मः उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में सभी भाषाओं, धर्म, परंपराओं, संस्कारों एवं संस्कृतियों का बहुमान किया जाता है। इसमें अन्य धर्म जहां शारीरिक सुविधाओं एवं संपन्नता की बात करते है, जैन दर्शन शरीर से हटकर आत्मा के उन्नयन की विधि को स्वीकार करता है। प्रत्येक प्राणी अपने आप को विशुद्ध करते हुए परमात्मा बन सकता है। जैन दर्शन में दसलक्षण पर्व के साथ विशेष पर्व सोलह कारण, पुष्पांजलि, सुगंध दशमी, अनंत चतुर्दशी, रत्नत्रय, क्षमा वाणी का समावेश होता है। जिसके माध्यम से साधक संयम साधना व्रत, उपवास करते हुए अपने द्वारा किए हुए अपराधों की क्षमा याचना करके सभी के प्रति सद्भवना, प्रेम, विश्व मैत्री, परस्परोपग्रहो जीवानाम, अहिंसा परमो धर्म को जीवन में उतारने का पुरुषार्थ करता है। इस परिचर्चा में श्री योगेंद्र जी का निर्देशन तथा राजेश जी के सान्निध्य एवं सौजन्य से यह प्रभावना लंदन के साथ संपूर्ण इंग्लैंड में की गई। अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद् के महामंत्री एवं प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ के निर्देशक ब्र. जय निशांत भैया जी को भारत के सभी विद्वानों की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है, उन्होंने भारतीय संस्कृति के साथ-साथ जैन धर्म की प्रभावना का कार्य विश्व स्तर पर संपादित किया है। श्री शांतिनाथ जिनालय छतरपुर मध्यप्रदेश भारत के निवासी श्री राजेश कुमार जी एवं श्रीमती मीता जैन ने अपने गृह प्रांगण में निर्मित कराकर यह पावन पुनीत कार्य किया है। जिसकी वेदी प्रतिष्ठा विगत अप्रैल में भैया जी के निर्देशन में ही संपन्न हुई थी।

दिव्यांग कैम्प सम्पन्न

अशोक जैन

तालबेहट, ललितपुर। अखिल भारतीय संस्था तरुण मित्र परिषद, दिल्ली द्वारा श्री दिगम्बर जैन पारसनाथ बड़ा मंदिर, तालबेहट मे आयोजित दिव्यांग कैम्प आज सम्पन्न हो गया। मुख्य अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष पुनीत सिंह परिहार ने कहा कि तरुण मित्र परिषद ललितपुर जिले में निरन्तर दिव्यांग कैम्प लगाकर सराहनीय कार्य कर रही है। उन्होंने उनके क्षेत्र में कैम्प लगाकर जरूरतमंद दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण प्रदान करने हेतु तरुण मित्र परिषद का आभार प्रकट किया।

परिषद के महासचिव अशोक जैन ने बताया कि रविन्द्र जैन व राजीव जैन सर्राफ, छपरौली के सहयोग से आयोजित इस 52वें दिव्यांग कैम्प में 14 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ व पैर), 15 पोलियोग्रस्त बच्चों को कैलिपर्स, 8 ऑर्थोशूज (जूते) 10 स्टिक, 2 वॉकर, 4 जोड़े बैसाखियां आदि व 10 श्रवणहीन बुजुर्गों को श्रवणयंत्र आदि उपलब्ध कराए गए।

इस अवसर पर परिषद के सहसचिव आलोक जैन, मुख्य सहयोगी रविन्द्र कुमार जैन, पूर्व पार्षद चक्रेश जैन, सुरेश बाबू जैन एडवोकेट, मंदिर अध्यक्ष अरुण जैन, महामंत्री अजय जैन, नितिन जैन आदि समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे। अंत में परिषद् के महासचिव अशोक जैन ने सभी सहयोगियों का आभार प्रकट किया। मंदिर समिती द्वारा सभी के लिए अल्पाहार की व्यवस्था भी की गई।

समाजसेवियों का सम्मान

रमेश जैन

नई दिल्ली। अग्रवाल सभा शकरपुर-लक्ष्मीनगर द्वारा अग्रवाल भवन में महाराजा अग्रसेन जयंती पर 6 अक्तूबर को आयोजित भव्य समारोह में बच्चों व महिलाओं ने महाराजा अग्रसेन जी के जीवन पर प्रेरक नृत्य नाटिकाएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर पत्रकारिता के द्वारा धर्म प्रभावना के लिए रमेश जैन एडवोकेट नवभारत टाइम्स को दीक्षा अवार्ड प्रदान किया गया तथा सीनियर सिटिजन के रूप में समाजसेवा के लिए हरीश चंद्र गुप्ता को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। मेधावी छात्र-छात्राओं को भी सम्मानित किया गया।

मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज 'स्थविर पद' से संस्कारित

परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज ने 11 अक्टूबर को झांसी नगरी में विशाल जन समुदाय के मध्य संघस्थ मुनि श्री विशाल सागर जी महाराज को 'स्थविर पद' के संस्कारों से संस्कारित किया। ब्रह्मचारी मुकेश भैय्या को 28 मूलगुणों से संस्कारित कर मुनि विलक्ष्य सागर नाम प्रदान किया। ''स्थविर पद'' की जानकारी देते हुए आचार्य श्री विशद सागर जी ने कहा कि आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, प्रवर्तक, गणधर, ये पांच मुख्य स्तंभ मुनि संघ में होते है। पूर्व में आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज ने मुनिश्री संभव सागर जी को स्थविर पद से एवं गणाचार्य श्री विराग सागर जी ने मुनि श्री विहित सागर जी को 'स्थविर पद' के संस्कारों से अलंकृत किया था। उसी परम्परा में 20 साल से मुनि पद में दीक्षित प्रथम शिष्य मुनि विशाल सागर को 'स्थविर पद' से अलंकृत किया। विशाल मुनि एक तपस्वी मुनि है। 25 साल के साधना काल में 5000 व्रत-उपवासों की साधना कर चुके। शिखर जी में गौतम गणधर टोंक में लगातार 157 घण्टे की खड़गाहन काय क्लेश तप साधना की, दस माह में 300 बार शिखर जी की पद वन्दना की। 20 साल से अनवरत गुरूवर की छत्र छाया में साधनारत है। ऐसे स्थविर मुनि विशाल सागर जी की तप ध्यान व्रत-उपवास साधना आगे भी अनवरत चलती रहे, जब तक लक्ष्य की पूर्ण प्राप्ति न हो। कार्यक्रम के संयोजक विनोद टेकेदार, रविन्द्र जैन, सुनील जैन ने पधारे हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

विराट दिव्यांग कैम्प का आयोजन

अशोक जैन, महासचिव

जूनागढ़। आज यहां अखिल भारतीय संस्था तरुण मित्र परिषद, दिल्ली द्वारा समोशरण दिगम्बर जैन मंदिर, गिरनार तलेटी मे आयोजित कैम्प का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि महापौर गीताबेन ने कहा कि तरुण मित्र परिषद ने जूनागढ़ में दिव्यांग कैम्प लगाकर सराहनीय कार्य किया है। उन्होने कैम्प के प्रमुख सहयोगी मृदुला जैन परिवार के सहयोग की अनुमोदना की। श्री विश्व शांति निर्मल ध्यान केंद्र ट्रस्ट के ट्रस्टी मयूर जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षक्ता करते हुए कहा कि तरुण मित्र परिषद ने हमारे परिसर मे कैम्प का आयोजन कर इस महान सामाजिक कार्य में हमें सहयोग का अवसर प्रदान किया, सराहनीय है।

जैन गजट संवाददाता महावीर प्रसाद अजमेरा को मिला आशीर्वाद

संवाददाता

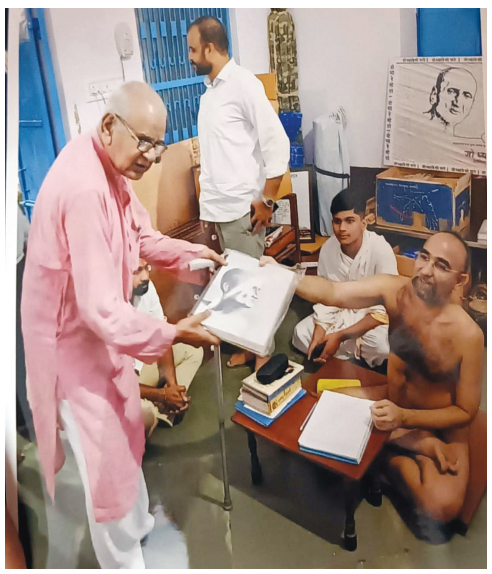

वरिष्ठ जैन गजट संवादाता महावीर प्रसाद अजमेरा जोधपुर से पारसोला आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के दर्शन करने आये, मार्ग में श्री पारसनाथ भगवान के दर्शन करने के बाद मार्ग में धरियावद में 108 मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज संघ का दर्शन किया। दिनांक 06.10.24 को मुनि श्री पुण्यसागर जी महाराज को एक जैन गजट की प्रति दी और मुनिश्री का आशीर्वाद लिया, मुनिश्री ने कहा कि जैन गजट की सेवा करो। मुनिश्री के दर्शन करने के बाद आचार्यश्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ का पारसोला में दर्शन किया। इसी संघ में मुनि श्री 108 हितेन्द्र सागर जी महाराज का दर्शन किया। मुनिश्री ने मेरे को आचार्यश्री शान्तिसागर जी महाराज का ग्रंथ दिया व फोटू भी दिया और कहा इसको घर पर लगाना और कहा कि इस ग्रंथ का प्रतिदिन स्वाध्याय करना, मैने कहा ऐसा ही करूंगा।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्य कुमार जिनप्पा गुंडे के समक्ष युवा परिषद् ने रखी कई मांगें

नवीन जिलों में खुलें जिला अल्पसंख्यक कार्यालय

जिनेन्द्र जैन

सवाईमाधोपुर। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्रीयुत धन्य कुमार जिनप्पा गुंडे का सवाईमाधोपुर आगमन पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार एवं प्रोटोकॉल अधिकारी मुकेश अग्रवाल और जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मनोज कुमार मीना, राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद् के अध्यक्ष जिनेन्द्र जैन, अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष बृजेन्द्र जैन ने रेलवे स्टेशन पर माल्यार्पण करते हुए जिनशासन का दुपट्टा पहनाकर पुष्पगुच्छ भेंट किया, इस अवसर पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य के साथ पधारीं उनकी धर्मपत्नी निर्मला जिनप्पा गुंडे और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के हरियाणा राज्य से पैनल लीडर एवं प्रसिद्ध वास्तुकार उर्मिल जैन एवं निजी सचिव आशीष दाधीच का प्रधानमंत्री के नए 15 सूत्रीय कार्यक्रम के पूर्व सदस्य सतीश जैन तथा राधेश्याम जैन, सुबोध कुमार जैन, अशोक कुमार जैन द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत सत्कार किया गया। इसके बाद सभी अतिथियों का बाघों की नगरी सवाईमाधोपुर पधारने पर आभार प्रकट करते हुए सर्किट हाउस चलने का अनुरोध किया गया।

सर्किट हाउस में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य धन्य कुमार जिनप्पा गुंडे ने जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी मनोज मीना से विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी लेकर दिशा निर्देश प्रदान देते हुए योजनाओं का प्रचार - प्रसार करने की बात कही, जिससे योजनाओं का लाभ अल्पसंख्यक वर्ग के सभी समुदायों को मिल सके। राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद् के अध्यक्ष जिनेन्द्र जैन ने अल्पसंख्यक मामलात विभाग के निदेशालय में सहायक निदेशक के पद पर विभाग के स्थाई आधिकारियों को लगाने, नवीन जिलों में अल्पसंख्यक कार्यालय खोलकर वहां जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी एवं कार्यक्रम अधिकारी एवं अन्य स्टाफ लगाने, प्रधानमंत्री जी के नए 15 सूत्री कार्यक्रम में प्राकृत शिक्षण के लिए अधिक संसाधन एवं वीतरागी शिक्षा का आधुनिकीकरण करने का बिन्दु शामिल करने, प्रधानमंत्री जी के नये 15 सूत्री कार्यक्रम राज्य एवं जिला स्तर पर अल्पसंख्यकों से सम्बन्धित प्रतिष्ठित संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्यों की नियुक्ति करने जिसमें अल्पसंख्यक वर्ग के प्रतिनिधियों को राज्य एवं जिला स्तर पर उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने, प्रधानमंत्री जी के नए 15 सूत्री कार्यक्रम की ब्लॉक स्तरीय कमेटी का गठन करने का प्रावधान करने, राजस्थान राज्य अल्पसंख्यक आयोग के पैनल में प्रत्येक जिले से अल्पसंख्यक वर्ग के सभी समुदायों के विशेषज्ञ सलाहकार सदस्य बनाने, राजस्थान में अति अल्पसंख्यक वर्ग (जिनकी जनसंख्या अल्पसंख्यक वर्ग में 10 प्रतिशत से कम हो) के लिए संभाग स्तर पर अल्पसंख्यक छात्रावास और अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय खोलने की मांग गुंडे साहब से की जिस पर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य ने आयोग द्वारा न्याय संगत कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर राजस्थान समग्र जैन युवा परिषद् के संरक्षक एवं पूर्व तहसीलदार ज्ञानचन्द जैन और समाजश्रेष्ठी सतीश जैन ने अल्पसंख्यक हित में गंगापुर सिटी जिले में जिला अल्पसंख्यक मामलात कार्यालय खोलने का निवेदन करते हुए बताया कि सवाईमाधोपुर जिले से गंगापुर सिटी जिले में आने वाले उपखण्ड मुख्यालय गंगापुर सिटी, वजीरपुर, बामनवास, टोडाभीम, नादौती की दूरी लगभग 80-90 किलोमीटर है जिसके कारण आवागमन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है और कुछ उपखण्ड मुख्यालय से आवागमन के साधन भी बहुत कम है। इस अवसर पर अल्पसंख्यक वर्ग के सभी समुदायों के लोग उपस्थित थे।

अ. भा. पल्लीवाल जैन प्रतिभा सम्मान समारोह इन्दौर में आयोजित

इन्द्र कुमार जैन

इन्दौर। दिनांक 29 सितंबर 2024 को श्री सुमति धाम इन्दौर में भव्यतापूर्ण प्रतिभा सम्मान समारोह संचालित हुआ, अतिथि स्वरूप सुमत प्रकाश, डॉ. अनुपम, पं. जयसेन बाबूजी, राजेन्द्रजी, महेन्द्रजी, राजीव रत्न, आदि-2 उपस्थित रहे, जिससे 80 वर्ष से अधिक वरिष्ठों का सम्मान, दशलक्षण पर्व में 3 से अधिक उपवास करने वाले को सम्मान एवं उपहार भेंट किए गए एवं इस वर्ष नवीन राष्ट्रीय योजना के आधार पर छहढाला के रचियता पं. श्री दौलतरम मेमोरियल राष्ट्रीय अवार्ड का शुभारंभ किया गया जिसमें विश्व ख्याति प्राप्त एक मात्र जैन गणितज्ञ प्रोफेसर डॉ. श्री अनुपम जैन (देवी अहिल्या बाई विश्वद्यालय) को राष्ट्रीय प्रतिभा स्वरूप निर्वाचन अधिकारियों द्वारा चुनाव किया गया व प्रशस्ति व 5 अंकों की राशि द्वारा सम्मानित किया गया व उन्हें द्वितीय ''समाज-गौरव'' सम्मान से भी नवाजा गया, इसी क्रम में डॉ. सिद्धार्थ जैन एम एस (अपोलो हॉस्पिटल) को भी चतुर्विध जैन साधु संतों की निःशुल्क चिकित्सा सेवा हेतु ''समाज-गौरव'' सम्मान से नवाजा किया गया, लगभग 40 से अधिक प्रतिभावान विद्यार्थीयों का सम्मान भी उपहार व सम्मान-पत्र देकर किया गया तत्पश्चात सामूहिक क्षमावाणी मिलन समारोह आयोजित किया गया जिसमें एक-दूसरे से क्षमा मांगी।

अंतर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक डॉक्टर मोहनलाल "मणी" जैन ने बनाई डेंगू की प्रीवेंटिव दवा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ होम्योपैथ एवं दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप तीर्थंकर के अध्यक्ष डॉ. एम एल जैन '' मणि '' ने वर्तमान में फैल रहे डेंगू से निजात पाने के लिए होम्योपैथी की प्रिवेंटिव दवा बनाई है, यह दवा दो प्रकार की बनी है, प्रिवेंटिव दवा सात दिन में एक बार लेनी होगी व जिनको हो गया है उन्हें मरीज को दिखा कर दवा लेनी होगी। यह दवा हजारों मरीजों को दी जा चुकी है इससे प्लेटलेट्स भी शीघ्र बढ़ते हैं, इसके आशातीत परिणाम मिले हैं।

डॉ. ''मणि'' प्रतिषेधक दवाईयों का पिछले 55 वर्षों से निर्माण व निःशुल्क वितरण कर रहे हैं, ये दवा 8949032693 पर सम्पर्क कर निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है। स्मरण रहे इन्हें हाल ही में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन इन्दौर ने इनकी कोविड-19 के मरीजों को निःशुल्क प्रतिषेधक दवा वितरित करने एवं कोविड मरीजों का निःशुल्क आनलाइन इलाज करने के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया था, इसके अलावा दिगम्बर जैन महासमिति व अन्य कई संस्थाओं ने भी इस नेक कार्य के लिए इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया था। डेंगू की यह दवा प्रातः 11 से 12 व सायं 5 से 6 निःशुल्क प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त वाइरल फीवर की भी दवा दी जा रही है। इस नेक कार्य में डा. मणि के अलावा यह कार्य डॉ. शान्ति जैन मणि व डॉ. मनीष जैन मणि भी कर रहे हैं।

राजकीय अतिथि, कवि, हृदय, वात्सल्य मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानपयोगी, आचार्य 108 श्री शशांक सागर जी मुनिराज का श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर वरूण पथ मानसरोवर, जयपुर में चातुर्मास चल रहा है

शशांक वाणी

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण, बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन, ऐसे आचार्य शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत शत नमन

जिसका उदय होना निश्चित है उसके लिए प्रकृति भी रास्ता बना देती है।

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

1. श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर, जयपुर)
2. पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
3. श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपर)
4. श्रेष्ठी अनूप चंद जैन (भुसावर वाले, जयपुर)
5. श्रेष्ठी महेश-रोकेश कुमार ठोलिया (मारूजी का चौक, जयपुर)
1. अरूण कुमार काला अध्यक्ष (कीर्ति नगर जयपुर)
2. अशोक चांदवाड, (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
3. निर्मल कुमार सोगानी, (कीर्ति नगर, जयपुर)
4. अनिल कुमार सेठी कुचीलवाले (मदनगंज किशनगंज)
5. भंवरी देवी काला ध.प. महेन्द्र काला, (स्वर्णपथ मानसरोवर जयपुर)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

गोलालारे द्वारा क्षमावाणी एवं परिवार मिलन समारोह मनाया गया

ग्वालियर। कम्पू स्थित जैन छात्रावास मे श्री दिगम्बर गोलालारे जैन समाज ने अपना तृतीया क्षमावाणी पर्व बड़ी ही धूमधाम से बहुत ही सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रमों व वात्सल्य भोज के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में ग्वालियर शहर की समस्त गोलालारे जैन समाज, अन्य जैन समाज के प्रतिनिधि, भिण्ड, मेहगांव, गोरमी, देहली, अहमदाबाद, इन्दौर के साथ साथ पांचई अतिशय क्षेत्र कमेटी, नेमिनाथ मंदिर कमेटी के प्रतिनिधि अपने अपने पदाधिकारियों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

लाडनूं में सुखदेव गंगवाल परिवार द्वारा सुखदेव आश्रम में हुआ श्री मज्जिन सहस्त्रनाम विधान का आयोजन

लाडनूं (सीए महेंद्र पाटनी)। यहां गत दिनों नगर के सुखदेव गंगवाल परिवार के तत्वावधान में यहां सुखदेव आश्रम में 3 दिवसीय श्री मज्जिन सहस्त्रनाम विधान व विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन किया गया। 11 से 13 अक्टूबर तक आयोजित हुए इस धार्मिक अनुष्ठान का शुभारंभ 11 अक्टूबर को सुखदेव गंगवाल परिवार द्वारा ध्वजारोहण, सकलीकरण व भूमि शुद्धि, अभिषेक व शांतिधारा के साथ किया गया। भूमि पूजन व विधि-विधान व मंत्रोच्चार के साथ विधान का उद्घाटन हुआ। श्रमण संस्कृति संस्थान, सांगानेर (जयपुर) के युवा विद्वान प्रखर प्रवचनकार डॉ. किरण प्रकाश जैन ने सायंकालीन प्रवचन सभा को उद्बोधित करते हुए कहा कि हमारे जीवन की सार्थकता इसे धार्मिक कार्यों में समर्पित कर देने में ही है। जैन धर्म में धार्मिक अनुष्ठानों की एक गौरवशाली परंपरा है और यह हमारे जीवन में शांति व खुशहाली का मार्ग प्रशस्त करती है। अनुष्ठान में भारी संख्या में प्रवासी व लाडनूं निवासी जैन समाज के धर्मावलंबियों ने श्रद्धा के साथ भाग लिया। सागर की सुविख्यात संगीत पार्टी अहिंसा एंड पार्टी ने भक्ति भाव से परिपूर्ण उत्कृष्ट संगीत के वातावरण में धार्मिक अनुष्ठान संपादित कराया। रात्रिकालीन महाआरती में अहिंसा एंड पार्टी के कलाकारों की प्रस्तुतियों पर श्रोता झूमने के लिए विवश हो गए। इस 3 दिवसीय धार्मिक अनुष्ठान में प्रतिदिन रात्रि में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसमें जैन समाज के लोगों ने उत्साह के साथ भारी संख्या में शिरकत की। इस अवसर पर एक बहुत ही रोचक व सरस सामान्य ज्ञान प्रश्नावली आयोजित की गई, जिसमें विजेता सहभागियों को आयोजक परिवार द्वारा पुरस्कृत किया गया। अनुष्ठान के दूसरे दिन प्रातःकालीन प्रवचन सभा में तेरापंथी संत मुनि जयकुमार ने कहा कि धर्माराधना हमारे जीवन के कल्याण का मूलमंत्र है। हमें हर क्षण आत्मावलोकन की दिशा में सक्रिय रहना चाहिए। सभा में राजेंद्र गंगवाल, भरत जैन, सीए महेंद्र पाटनी आदि कार्यकर्ताओं ने तेरापंथी संत मुनि जयकुमार जी का स्वागत कर सभा में पधारने के लिए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। अनुष्ठान में देश-विदेश के विभिन्न शहरों से आए विभिन्न श्रावक-श्राविकाओं ने श्रीजी का अभिषेक, शांतिधारा, पूजा-प्रचार, महाआरती व सहस्त्रनाम विधान में सम्मिलित होकर धर्माराधना की। अनुष्ठान के समापन के अवसर पर लाडनूं दिगंबर जैन समाज के पदाधिकारियों ने अनुष्ठान के आयोजक गंगवाल परिवार के सदस्यों का समारोह पूर्वक स्वागत व अभिनंदन किया गया। गंगवाल परिवार ने समारोह में उल्लेखनीय सहयोग व सहभागिता के लिए नगर के जैन समाज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

समारोह में अशोक गंगवाल, राजेंद्र गंगवाल, अजीत गंगवाल, रवि गंगवाल, संजय गंगवाल, कमल गंगवाल, प्रदीप गंगवाल, आनंद सेठी, धनकुमार पाटनी, भागचंद जैन, सीए महेंद्र पाटनी, पवन मेहता सहित देश-विदेश से आए प्रवासी लोगों ने उत्साह एवं सक्रियता का परिचय दिया। अनुष्ठान के समापन समारोह में अतिथि के रूप में समागत सुजानगढ पुलिस उप अधीक्षक दरजाराम बोस ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सुखदेव आश्रम लाडनूं की धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहर है। यह नगर की ऐसी विरासत है, जिस पर लाडनूं के वासियों को गौरव की अनुभूति होती है। मंदिर में स्थापित मूर्तियों की भव्यता और उत्कृष्ट स्थापत्य कला यहां आने वाले श्रद्धालुओं को बरबस ही आकर्षित करती है और उनके अंतर्मन को प्रभावित करती है। इस अवसर पर आयोजक परिवार द्वारा डीएसपी दरजाराम, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं प्राकृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र कुमार जैन, आलोक खटेड़, डॉ. वीरेंद्र भाटी आदि अतिथियों का सम्मान किया गया। समग्र समारोह में लगभग 300 श्रद्धालुओं की सतत सहभागिता रही। कार्यक्रम का संयोजन चांदकपूर सेठी ने किया।

सिहोनियांजी में रखी गई नवीन जिनालय की आधार शिला शांतिधारा एवम शांति विधान सहित हुए अनेकों आयोजन

सिहोनियां/मुरैना (मनोज जैन नायक) जैन तीर्थ अतिशय क्षेत्र सिहोनियांजी में भव्य आयोजन के दौरान श्री चंद्रप्रभु जिनालय की आधार शिला रखी गई। समाजसेवी राजीव जैन ''रोमी'' द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार पूज्य गुरुदेव अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के आशीर्वाद एवं युगल मुनिराज श्री शिवानंद जी महाराज व मुनिश्री प्रशमानंद की महाराज को पावन प्रेरणा से पटेल नगर दिल्ली निवासी चौधरी मोहित जैन ''चीकू'' ने एक नवीन जिनालय के निर्माण का संकल्प लिया था। नवीन जिनालय निर्माण के संकल्प को पूरा करने बाबत आज जैन तीर्थ सिहोनियांजी में एक भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मंत्रोच्चारण के मध्य नवीन जिनालय का शिलान्यास करते हुए जैसवाल जैन परिवार के पुनविया गोत्रिय चैधरी मोहित जैन ''चीकू'' ने अपने परिजनों के साथ नवीन जिनालय की आधार शिला रखी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रातः मूलनायक भगवान श्री शांतिनाथ जी, श्री कुंथनाथ जी व श्री अरहनाथ भगवान का जलाभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन किया गया। प्रतिष्ठाचार्य पंडित मनोज शास्त्री अहारजी के आचार्यत्व में श्री शांतिनाथ विधान का आयोजन किया गया। समस्त अनुष्ठान में पंडित संजय शास्त्री एवं पंडित महेंद्र शास्त्री सिहोनियां ने सहयोग प्रदान किया।

प्रतिष्ठाचार्य द्वारा मंत्रोच्चारण के मध्य टीकमचंद जैन, धन्नालाल जैन, राजीव जैन, श्रीमती मुन्नीदेवी जैन, चौधरी मोहित जैन चीकू-मनीषा जैन, मनोज विमलेश जैन, शुभम जैन ने नवीन जिनालय की आधार शिला रखी। आधारशिला के स्थापित करते ही पूरा पांडाल श्री जिनेंद्र प्रभु के जय जयकारों से गूंज उठा। उपस्थित सभी बंधुओं ने चौधरी परिवार की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए उनके पुण्य की अनुमोदना की। ज्ञात हो कि आगरा निवासी स्व. चौधरी इंद्रभान जैन के सुपुत्र चौधरी मोहित जैन ''चीकू'' पटेल नगर दिल्ली, अतिशय क्षेत्र सिहोनियाजी में 30 गुणा 40 का नवीन जिनालय का निर्माण करा रहे हैं। उक्त जिनालय में तीन वेदियां एवं तीन शिखर निर्मित होंगे। नवीन जिनालय में मूलनायक श्री चंद्रप्रभु भगवान के साथ ही अति प्राचीन तीर्थंकरों की प्रतिमाओं को विराजमान किया जायेगा। उक्त मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा आगामी 05 फरवरी से 10 फरवरी 2025 तक आचार्य श्री वसुनंदी जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में होना प्रस्तावित है। श्री चंद्रप्रभु जिनालय के शिलान्यास के पावन अवसर पर क्षेत्र कमेटी के परम संरक्षक जिनेश जैन अंबाह, संरक्षक आशीष जैन सोनू, पंचाराम जैन, रामनिवास जैन, हरीश चंद जैन, वीरेन्द्र कुमार जैन, महावीर प्रसाद जैन, राम स्वरुप जैन, अंवरीश जैन, कुंजल जैन, राजीव जैन रोमी, मुन्नालाल जैन, संजीव जैन, विजय जैन, देवेन्द्र जैन, अंकित जैन, सुरेशचंद जैन, प्रकाशचंद जैन, दिनेश जैन, डोवी जैन, मनोज जैन नायक, अजय जैन अल्लू, पंकज जैन सहित दिल्ली, आगरा, मुरैना, अम्बाह, राजाखेड़ा, शमशाबाद, धौलपुर ग्वालियर सहित सैकड़ों की संख्या में साधर्मी बंधु उपस्थित थे।

SUPERCON
Durable, Hygienic, Strong Quality Products
Take a Step towards better hygine..
Water Tanks

• Easy Installation • Easy To Clean • Safe for Drinking Water

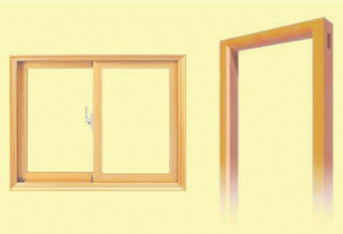

Septic Tanks
• No Maintenance Required
• No Construction Required
• Keeps Environment Clean

Solid Plastic Chakhats
Available in Sizes & Design As Per Requriments
• Water, Termite and Warping Proof
• Maintenance Free • Life 50+ Years

Jain Agencies
17 A, Neel Cottage Maldhaiya, Varanasi 221002
email: jainagencies3@gmail.com +91 88874 58519, 9415225395

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. गुरूजी जय जिनेन्द्र, पिछले 5 साल से मेरा जर्मनी में भी कार्य चल रहा है। क्या मुझे भारत छोड़कर जर्मनी में बस जाना चाहिये? - चुनीलाल, अजमेरा

उत्तर - चुनीलाल जी, अगर आप जर्मनी में शिफ्ट होना चाहते है तो अवश्य हो सकते हैं, बस आप श्री भक्तामर स्तोत्र का 2 नं. काव्य रोजाना 4 बार पढ़ो।

प्रश्न 2. गुरूजी जय जिनेन्द्र, मेरा एक मित्र अमेरिका में रहता है, क्या वह कभी दिल्ली वापस आयेगा? - मधुकर जैन, दिल्ली

उत्तर - मधुकर जी, आपने जो अपने दोस्त की जन्म पत्री भेजी है, उसके अनुसार 1 वर्ष के पश्चात वह वापस भारत आयेगा और यही पर व्यापार करेगा।

प्रश्न 3. गुरूजी, मेरा नाम विजय है और मै अपने पैतृक गांव में खेती करना चाहता हूं, क्या मुझे इसमें सफलता मिलेगी - विजय जैन, इन्दौर (म.प्र.)

उत्तर - विजय जी, निश्चित रूप से अगर आप अपने पैतृक गांव में खेती कर अपना जीवन यापन करना चाहते है, तो कर सकते हैं। आप श्री मुनिसुव्रतनाथ जी का चालीसा रोजाना पढ़ें।

प्रश्न 4. मुझे व्यापार में लगातार घाटा हो रहा है, मै क्या करूं? - ओमवीर, मु. नगर (उ.प्र.)

उत्तर - ओमवीर जी, आप माणिक्य का सवा 5 रत्ती का लॉकेट रविवार को गले में धारण करें। श्री भक्तामर स्तोत्र का 28वां काव्य रोजाना 10 बार पढ़ें तथा श्री पदम प्रभु जी का चालीसा सूर्य उदय के समय पढ़ें।

गुरु जी से संपर्क सूत्र-
9990402062, 8826755078

जैन गजट में वैवाहिक विज्ञापनों का निशुल्क प्रकाशन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा **दिगम्बर जैन समाज के केवल अविवाहित युवा एवं युवतियों के वैवाहिक विज्ञापन** जैन गजट साप्ताहिक में निशुल्क दिनांक 31/12/2024 तक प्रकाशित करने जा रही है। कृपया इस योजना का लाभ उठाते हुए विज्ञापन प्रकाशन हेतु नीचे दिये गये फार्म को भरकर वाट्सअप पर भेजकर लाभ उठायें- 9415108233, 9415008344, 7505102419। किसी भी व्यक्ति का वैवाहिक विज्ञापन केवल एक बार ही प्रकाशित किया जायेगा। निम्न फार्म पर भेजा हुआ विज्ञापन ही 50 शब्दों तक का प्रकाशित किया जायेगा।

जैन गजट में वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशन हेतु फार्म

वर/वधु का नामः .....जन्म तिथिः उम्र.....अविवाहितः हां ( ) नहीं ( )

शहर/जिलाः .....प्रदेश.....

धर्म/मातृभाषाः.....समुदाय.....कदः.....फुट.....

.इंच.....कलर..... सामान्य ( ) मांगलिक ( )

जाति.....गोत्रः.....शिक्षाः.....

व्यवसाय/ नौकरी का विवरण.....

प्राथमिकताएं/अपेक्षाः.....

पिता का नामः.....पिता का व्यवसायः.....

पिता की आयः .....भाई/बहनः .....शहर/राज्यः.....

संपर्क सूत्र/वाटसअप नं.: .....ईमेल आधार कार्ड/आईडी संख्या

(वाट्स अप पर साथ में भेजें).....

पूरा पता (पिन कोड सहित).....

मोबाइल नम्बर.....वाटसअप.....ईमेल.....

आचार्य श्री शान्तिसागर जी के आचार्य पद शताब्दी वर्ष पर कोटि-कोटि नमन

श्री सुमतिनाथ जिन चैत्यालय तेघारिया (कोलकाता) में श्री शान्तिसागर जी महा मुनिराज जी का आचार्य पद शताब्दी समारोह बहुत ही धूमधाम से मनाया गया, इस उपलक्ष्य में एक विशेष प्रभातफेरी का आयोजन बहुत ही धूमधाम से किया गया। महावीर जी, धनपाल जी, अशोक जी, दिनेश जी, अक्षय जी, सचिन जी, रंजीत जी, राहुल जी, मनीष जी एवं संगीता जी, शर्मिला जी, नीलम जी, अनीता जी, सारिका जी, कांता जी, रश्मि जी जैन आदि अनेक लोग उपस्थित थे, सभी लोगों ने इस धार्मिक समारोह का पूरा लाभ लिया। संवाददाता महावीर जी जैन कोलकाता ने जैन गजट को बताया कि अनेक अतिथियों एवं गणमान्य साधर्मी बंधुओं की उपस्थिति ने इस कार्यक्रम में चार चांद लगा दिये।

वैवाहिक विज्ञापन
वधु चाहिये

(1) पियूष बड़जात्या, 18 मार्च 1992, 5 फुट 5 इंच., फेयर, बड़जात्या, गंगवाल, बी. काम, व्यवसाय, पिताः नरेश जैन, नागौर, बहनः मिथलेश जैन, संपर्क 9413140496

(2) रितेष कुमार जैन (मनू), 24 सितम्बर 1989, 5 फुट 9 इंच., फेयर, गंगवाल, एम. बी. ए, एम.काम, व्यवसाय, पिताः राजेन्द्र कुमार जैन- व्यवसाय, भाईः अंकित जैन, किशनगढ़, अजमेर, संपर्क 9830049992

'सुखी जीवन का आधार शाकाहार' का विमोचन

अभिषेक जैन लुहाड़िया

पालीताना। शाकाहार के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान देने वाले अनेक संतों की आशीष प्राप्त डॉक्टर कल्याण गंगवाल पुणे को भला कौन नहीं जानता उनके द्वारा शाकाहार के प्रचार प्रसार में किया जा रहे कार्य से अनेक लोगों ने मांसाहार को छोड शाकाहार की और अपना कदम बढ़ाया है। निश्चित रूप से उनके योगदान को हर कोई भूल नहीं सकता। उनके द्वारा 'सुखी जीवन का आधार शाकाहार' पुस्तक इसमें बहुमुखी भूमिका निभा रही है। अनेक संतों की उपस्थिति में इस पुस्तक का विमोचन हो चुका है। वहीं रविवार की बेला में पालीताना में जैन प्रोफेशनल कॉन्फ्रेंस जीतो और जिओ के प्रणेता आचार्य नय पद्म सागर सुरी जी के सानिध्य में संपन्न हुई।

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एक्सप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सम्पादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबा. 08290950000

महामंत्री
प्रकाशचंद्र जैन बड़जात्या
Mob- 09840213132

कोषाध्यक्ष
पवन गोधा
मो. 9311198985

प्रधान सम्पादक
कपूरचन्द जैन (पाटनी)
मो. 09864118950, 0 9854050969
Email- k.c.jain39@gmail.com

परामर्शक सदस्य
बसन्त कुमार शास्त्री, शिवाड़
मो. 08107581334

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233, 9369025668
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com

सह सम्पादक (मानद)
डॉ. श्री महावीर शास्त्री, सोलापुर
मो. 09422457582
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391,
9415008344,7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल
jaingazette2@gmail.com
पर भेजें

आयुर्वेद से आरोग्य क्रांति

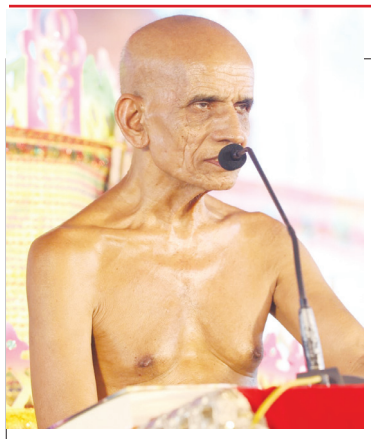

मुनिश्री अक्षयसागरजी

भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों ने एक ओर जहां अध्यात्म की साधना के लिए ज्ञान और योग का उपदेश दिया वहीं दूसरी ओर हमारे खानपान और आहार शुद्धि पर जोर दिया है। आहार शुद्धि, सत्व शुद्धि होने से चित्त शुद्धि होती है। इस निर्मल चित्त से ही धर्म का प्रकाश होता है। धर्म साधना के लिए शरीर श्रेष्ठ एवं प्रथम साधन है।

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य के लिए मुख्य साधनरूप शरीर को निरोगी रखने की आवश्यकता है क्योंकि रोगी शरीर से कोई भी पुरुषार्थ सिद्ध नहीं हो सकता।

दिनचर्या और ऋतुचर्या: शरीर में वात, पित्त और कफ ये तीन दोष रहते हैं। ये दोष जब समान स्थिति में हों तब शरीर को निरोगी रखते हैं और जब विषम स्थिति में होते हैं तब शरीर को रोगी बनाकर अंत में उसका नाश कर देते हैं। इसके लिये दिनचर्या और ऋतूचर्या मुख्य है। प्रत्येक ऋतू दो माह का होता है। 2 माह में ऋतू बदलने से त्रिदोष न्यूनाधिक होते हैं। छह ऋतू - हेमंत, शिशिर, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद हैं।

हेमंत-मार्गशीर्ष, पौंष, शिशिर-माघ, फागुण, वसंत-चैत्र, बैसाख, ग्रीष्म-जेष्ठ, आषाढ़, वर्षा-श्रावण, भाद्रपद, शरद-आश्विन, कार्तिक उपरोक्त ऋतू में यह माह आते हैं। उसमें दक्षिणायन-शिशिर, वसंत, ग्रीष्म और उत्तरायण-वर्षा, शरद, हेमंत के दौरान होते हैं। उत्तरायण के समय पर तीक्ष्ण तथा रुक्ष वायु चलती है। इसी से इन तीनों ऋतुओं में रस भी रुक्ष, कड़वा और तीखा होने के कारण मनुष्य शरीर निर्बल और हीन वीर्य वाला होते हैं। दक्षिणायन में रस खट्टा, खारा और मीठा होने से मनुष्य सबल और वीर्यवान होते हैं। ऋतु के अनुसार आहार-विहार और प्रतिकूल का त्याग करने से ऋतुजन्य रोग उत्पन्न नहीं होते हैं।

दिनचर्या: अर्थात स्वस्थ पुरुष आयु की रक्षा के लिए ब्रह्म मुहूर्त में उठे।

शरीर के सब धातु समान रह कर धातु क्रिया व मल क्रिया सम रहना मन, इंद्रिय सम रहकर बुद्धि प्रकर्षक उत्कृष्ट प्रकार से रहना इसे स्वास्थ्य कहते हैं। स्वस्थ पुरुष आयु की रक्षा के लिए ब्रह्म मुहूर्त में उठें। सूर्य उदय के डेढ़ घंटा पूर्व उठना शरीर को स्वस्थ रखने हेतु उपयुक्त समय माना गया है। प्रातः शरीर, मन, बुद्धि सब ताजे हो जाते हैं। रात्रि में समय पर सोना जरुरी है।

निसर्ग से विपरीत पचनसंस्था, बुद्धी, दृष्टि, मानसिक संतुलन, यकृत में विकृती, जलोदरादी रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं।

अव्यवस्थित जीवनशैली से शरीर रोगों का **घर:** भोपाल (मध्यप्रदेश) 2016 में आचार्यप्रवर श्री विद्यासागरजी महाराजजी ने अपने प्रवचन में कहा था ''अव्यवस्थित जीवन शैली से शरीर रोगों का घर बनता है। जो आयु हम बांध कर लाए हैं वह किसी भी प्रकार से बढ़ा नहीं सकते। अर्थात उसमें उत्कर्षण नहीं हो सकता, अपकर्षण हो सकता है, उसका कारण अपने खान-पान से रहन-सहन और अव्यवस्थित जीवन शैली से आयु कम कर रहे हैं।''

जैनाचार्यों के मत से द्वादशांग शास्त्रों में जो दृष्टिवाद नाम का जो बारहवां अंग है उसमें पांच भेदों में से एक भेद में से एक भेद पूर्व (पूर्वगत) है। उसके भी चौदह भेद हैं। इन भेदों में जो प्राणावाद पूर्वशास्त्र है उसमें विस्तार के साथ अष्टांगायुर्वेद का कथन किया है। यही आयुर्वेद शास्त्र का मूल शास्त्र अथवा मूल वेद है। उसी वेद के अनुसार ही सभी आचार्योंने आयुर्वेद का निर्माण किया है।

क्षु. ज्ञानभूषण महाराज ने 'पवित्र मानव जीवन' में सर्वथा निरोगता का साधन बताते हुए कहा है - 'मनोनियन्त्रण सात्विक भोजन यथाविधी व्यायाम करें।'

'वह प्रकृति देवी के मुख से
सहजतया आरोग्य वरे'
'इस अनुभूत योग की सम्प्रति मुग्ध,
बुद्धि क्यों याद करें।'
'इधर उधर की औषधियों में
तनु धन वृष बर्बाद करें'

बीमारी का मूल कारण - अति भोजन, अभक्ष्य खाना, प्रकृति विरुद्ध और अनियमित भोजन करना, इससे त्रिदोष से रोग होते हैं। वातविकार से शरीर में अत्यधिक पीड़ा, पित्तविकार से दाह, तृषा आदि होती है। कफ विकार से स्थूल, घन, स्थिर व खुजली होती है।

सर्व रोग का निदान कुपित मल के द्वारा ही किया जाता है।

उपचार: एलोपैथी, होम्योपैथी, नैचरोपैथी, पाश्चात्य चिकित्सा, आयुर्वेद और युनानी आदि के द्वारा करते हैं।

एलोपैथी – शरीर चिकित्सा में दवाईयां लेने से उसे रोग निदान तो हो जाता है लेकिन उसी दवाईयों के द्वारा शरीर के अन्य पूर्जे खराब होने की आशंका होती है, इससे साईड इफेक्ट होते हैं लेकिन आयुर्वेद के द्वारा दी जाने वाली दवाईयाँ शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाती है।

'आयुर्वेद:' आयुष्य के लिए क्या हितकर-अहितकर, सुखकर-दुखकर है। इनका वर्णन अथवा परिमाण जिसमें मिलता वह आयुर्वेद है।

'आयुर्वेद का ध्येय: स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगियों को रोग मुक्त करना यही आयुर्वेद है।

वैद्य अ. 7 में लिखा है - वैद्य निस्पृह: होकर चिकित्सा करें, चिकित्सा रोगों का नाश करने वाली है। चिकित्सा से धर्म की वृद्धि होती है। चिकित्सा एक तप है इसलिए चिकित्सा को कोई काम, मोह और लोभवश होकर न करे, चिकित्सक के अपने मन में किसी भी प्रकार का विकार नहीं रहना चाहिए किंतु वह रोगियों के प्रति करुणा बुद्धि से व अपने कर्मों के क्षय के लिए चिकित्सा करे। इस प्रकार निस्पृह व समीचीन विचारों से की गयी चिकित्सा व्यर्थ नहीं होती। इस वैद्य को अवश्य सफलता मिलती है - जैसे किसान परिश्रम पूर्वक खेती करता है, फल अवश्य उसी प्रकार मिलता है, परिश्रम पूर्वक किये हुए उद्योगों में भी वैद्य को अवश्य फल मिलते हैं। चिकित्सा व्यवसाय नहीं सेवा है।

आयुर्वेद - 'दोष धातू मल मूलहि शरीरम' वात, पित्त, कफ - त्रिदोष, सप्तधातु और तीन मल इनका संतुलन होना ही स्वास्थ्य रक्षा मानी जाती है। शरीर में रोग विजातीय द्रव्य या विष का परिणाम होता है। रोग के समूल नाश के लिए आवश्यक है कि उस विष को बाहर निकालकर शरीर की शुद्धि की जाए और इसका सबसे उत्तम उपाय उपवास ही है। उपवास द्वारा प्राण शक्ति को अवकाश मिलता है, तो वह शीघ्र शरीर के सुधार और निर्माण में जुट जाती है।

अच्छी सेहत और मानसिक शांति के लिए एक बार ही आहार लेके संतुष्ट होना चाहिए। पहले लोग सौ, एक सौ दस उम्र तक स्वस्थ और सशक्त रहते थे। रोगों का नाम भी उनको पता नहीं था। इसलिए नीतिकार भी कहते हैं -'आधा भोजन कीजीये दुगना पाणी पिव।' 'तिगुना श्रम, चैगुनी हसीं वर्ष सवासो जीव'

पथ्य-अपथ्य का रखें ध्यान: आज तो औषधि पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन पथ्य और अपथ्य के बारे में नहीं बताया जा रहा है। कहीं कहीं अंडे को भी खाने के लिए डॉक्टर लोग बता रहे हैं। लेकिन उसमें आठ प्रकार के विष होते हैं, जिससे कई प्रकार के रोगों के शिकार बन जाते हैं।

पथ्य सेवन का सही तरह से पालन करेंगे तो औषधि का प्रयोजन कम हो जाता है और अपथ्य सेवन करें तो चिकित्सा का प्रयोजन ही नहीं रहता। पथ्यापथ्य सेवन का विवेक रखना महत्त्वपूर्ण है।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज जी ने हमें मूलाचार पढ़ाते समय आहार के बारे में बताते हुए कहा था, आहार ही हमारी औषधि है और जब भी हम बीमार पड़ते हैं तब हमें निसर्गोपचार करना चाहिए, तुरंत औषधी की ओर नहीं जाना चाहिये।

शुद्ध जल, शुद्ध आहार, शुद्ध हवा इसी से मन को शांति मिल सकती है।

शुद्ध जल ही अमृत, औषध है और उसमें आरोग्यदायी गुण है, लेकिन बिस्लेरी, आरओ पानी और जल शुद्धिकरण के पानी से हार्ट अटैक, शरीर में कमजोरी, सिरदर्द की परेशानियां होती रहती हैं। यूरोपियन देशों में इसकी बंदी है।

औषधि की शुद्धता महत्वपूर्ण है। अगर औषधि के नाम पर सुखी होने के लिए अनेक जीवों को संहार करके जो दवा बनायी जाती है वो हमारे लिए बहुत हानिकारक रहती है। इसलिए जैनाचार्यों ने कल्याणकारक आदि जैन आयुर्वेदिक ग्रंथों में मद्य, मांस, मधु का प्रयोग नहीं बताया केवल वनस्पति, खनिज क्षार रत्नादिक पदार्थों का ही औषधि में उपयोग बताया गया है। एक की हिंसा दूसरे की रक्षा धर्म के लिए सम्मत नहीं है। शरीर स्वास्थ्य आत्म स्वास्थ्य के लिए है, इंद्रिय भोग के लिए नहीं है। आहार के समान औषधी का भी परिणाम मन के त्रिगुण (सत्व-रज-तमो) पर होता है।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराजजी ने भारतीय प्राचीन आयुर्वेद के बारे में बोलते हुए कहा था - ''आयुर्वेद ग्रंथों में हजारों वर्ष पूर्व भी शरीर की शल्य चिकित्सा होती थी। यह जो प्लास्टिक सर्जरी है वह आज की नहीं है प्राचीन भारत में भी होती थी। यह अविष्कार भारत का ही है, विदेश का नहीं। इसलिए आयुर्वेद संस्कृति की ओर लौटना चाहिए और एलोपैथी की परतंत्रता एवं आर्थिक हानि से बचना चाहिए।''

आयुर्वेद भारत का प्राचीन शास्त्र है। आयुर्वेद जीवन विज्ञान है। आयुर्वेद में निरोगी होकर जीवन व्यतीत करना ही धर्म माना है। दुनिया में आयुर्वेद ही एक मात्र शास्त्र या चिकित्सा पद्धति है जो मनुष्य को निरोगी जीवन देने की गारंटी देता है। विश्व में आयुर्वेद से ही आरोग्य क्रांति हो सकती है।

'सर्वेपि सुखिन: संतु
सर्वे संतु निरामय:।'
'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु कश्चिद्
दु:खमापनुयात।।''

हे करुणामय भगवान विश्व के सभी जीव सुखी रहें। निरोगी रहें, जीव सचरित्रमय, सज्जनमय, दृष्टिगोचर होवे कोई कभी भी दु:ख को प्राप्त न होवे।

प्रेषक- डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

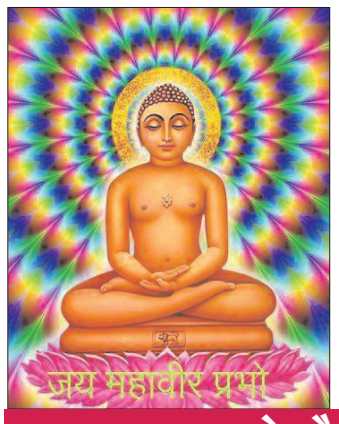

सुरेश कुमार-ललिता देवी बाकलीवाल, अमित कुमार- स्नेहा देवी बाकलीवाल, कैयरा, जेस्वी, शारव बाकलीवाल

सुरेश कुमार जैन एण्ड कंपनी

तरूण राम फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी-781001

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या : SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh, Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233, 7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
.....
.....
.....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-, दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।